# माधवविलास ॥

जिसमें

शृंगाररसान्तर्गत स्वकीया परकीया गणिका प्रभृत्यादि
बहुनायिका भेद उत्तमोत्तम कवित्तों के अनुप्रासमें
सुन्दर मधुर व ललित कवित्तों में नवीन रीति
से वर्णितहैं ॥

जिसको

श्रीअयोध्याप्रदेशान्तर्गत त्रिपुरीजिला [illegible] निवासि
श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी ने रसिक पुरुषों के
अनुरागार्थ व अवलोकनार्थ निर्मित किया ॥


## लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अक्टूबर सन् १८८८ ई०

पहलीबार १५००

इसयन्त्रालय में जो काव्य की पुस्तकें छपीहैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखीं



## काव्य ॥

### नानार्थनवसंग्रहावली ॥

पण्डित भारतदीन शुक्ल रचित ग्रन्थोंका संग्रहहै (१) संग्रहावली (२) रामायणमाला (३) रामायणगीताष्टक (४) ज्ञानदोहावली (५) रसमारिणी (६) तिथिबोध (७) मातृदत्तकृत पिंगल यह बहुत पुष्टहै कि स्त्री और बालक भी पढ़ सक्तेहैं ॥

### कृष्णप्रिया ॥

मंगलीप्रसाद विरचित ब्रजविलासकी तरहपर श्रीकृष्णजीका जन्मसे बैकुण्ठ गमन पर्यन्त चरित्रहै यह काव्यालंकार युत बहुतही सुन्दर पुस्तकहै ॥

### छन्दोर्णव पिंगल ॥

जिसमें मात्रा वृत, वर्णवृत,मेरु, मर्कटी,पताका, लघुगुरुस्थापन आदि और सब छन्दोंके दृष्टांत सहित छपेहैं ॥

### रसराज ॥

मतिरामजी कविरचित जिसमें अति मनोहरता से काव्यालंकार संयुक्त नायका भेदका वर्णनहै ॥

### कविकुलकल्पतरु ॥

भूषण चिन्तामणिजी रचित जिसमें अतिरुचिर छन्दोंमें नायकाभेद की पूरी बातें लिखीहैं ॥

### शतशयीसटीक बिहारीलालजी रचित ॥

श्रीकृष्ण राधाजीके विषयमें सम्पूर्ण नायका भेद का वर्णन सात सौ दोहोंमें है और दोहेके भावार्थ के सवैये और कवित्त भी है ॥

### सभाविलास ॥

जिससे सभाको चतुरता के लिये चुनीहुई बातें जैसेनीति, पांचों काव्यकी बहुतसी बातें रागोंकेस्वरूप वर्णन कियेगयेहैं यह पुस्तक संसार भरकेयोग्य और सभाओंके प्रचार के योग्यहै ॥



# माधवविलास ॥

दोहा ॥

श्रीगणपतिकेचरणयुग शारदचरणमनाय ।
करोकृपा जनजानिकै दीजै ग्रन्थ बनाय ॥
बहुतकबिनकोमतलै संग्रहकियोकबित्त ।
जोइपढ़ै आनंद अति होतिचतुरई चित्त ॥
लिखत आपनोवंश अरु ग्रामनामकुलजौन ।
तापीछे संग्रह लिखत पढ़ैंमुदितनर तौन ।

कवित्त ॥ अवधकोसूबा तीनिलोकमेंबिदिततहां राय
बरेली जिलाशुभगगनाइये । भागीरथी सातकोश
दक्षिण बिराजैं जाके नामलेत पातक अनेकन बहा-
इये ॥ माधव कहत तहां ग्राममिश्रखेर बसै चारिउब-
रण निज निज मनभाइये । तहां ममबास ताके करत
प्रकाश शम्भुशंकरको आशसदा मन बच काइये १
प्रथम त्रिपाठी लालमणिभे बिदित जाके ताकेतनैराम-
दीन सबजग जानेहै । ताकेसुत हैभयेप्रसिद्ध बेचूलाल

जाको वैद्यनमें नामसब कोबिद बखानोहै ॥ माधवप्र-
सादभये दूसरे पढ़तभाषा व्याकरण ज्योतिषअनेकमन
मानोहै । संग्रह कबित्त निजमति अनुसारकरि चूक
सभै कविजन जाको यहबानोहै २ प्रथम गणेशजीके
पुनि अप्सरानिनके चारि फिरि लिखेमाघ पंचमीब-
सन्तके । चारि लिखे फागुन के चारिही बसन्तऋतु
चारि ऋतुग्रीषम के बरषा सुतन्तके ॥ माधव कहत
चारि शरद बखानकीन्हे चारिही हिमन्त चारिशिश-
शिरसुरान्तके । यहिबिधि षटऋतु करिकै यकत्रजामें
पढ़ें सबकबि उर आनँद लसन्त के ३ सम्बत बखानौं
शून्य वेद गृह लग्न अरु भादोंकृष्णपक्ष अष्टमीको शुभ
जानिकै । संग्रह अरम्भकरो तादिन पढ़नकाज कबित
असित सत्तकबिनके आनिकै ॥ माधव विलास नाम
करिकै प्रकाश याहि नवरस नायकादि दशहू बखा-
निकै । आनँद बढ़ावनहै मोद उपजावनहै कबिमनभा-
वनहैसुन्दर प्रमानिकै ४ ॥ दोहा ॥ शिसिबरणोसबक-
बिनमिलि सकल नायका भेद । सोईरीति संग्रहकरत
छांड़ि सकलचितखेद ॥ कबित्त गणेश ॥ बालकमृणालनि-
ज्यों तोड़िडारै सबकाल कठिन कराल वे अकालदीह
दुःखको । बिपति हरतहठि पदमके पातसम पंकज्यों
पताल पेलि पठवै कलुषको ॥ दूरिकै कलंकअंकभव
शीशशशिसम राखतहै केशोदास दासकेवपुषको । सां-
करेकी सांकरन सनमुख होतहीते दशमुखमुखजोवैगज
मुखमुखको ५ एकई रदन गजबदन बिराजमान सदन

कदन सुत करन सोकामाको। कहै गिरिधारी गिरि-
राजनन्दिनीकोनन्द आनँदकोकंदजगबंदबरनामाको॥
गुण्डादण्डकुण्डली कमण्डलीकोमोहै मन भालचन्द
मण्डली बिशाल गुणग्रामाको। ऐसे गणनायक के बु-
द्धिबरदायकके पांयबन्दि कहत चरित्र श्यामश्यामा
के २ सत्वसत्ययुगकोकि सत्यहीकि सत्यशुभ सिद्धि
की प्रसिद्धि कैधैं बुद्धिवृद्धि जानिये। ज्ञानहीकीगरि
माकी महिमा बिबेक की कि दरशनही को दरशन
उर आनिये॥ पुण्यको प्रकाश वेदविद्या को बिलास
कैधैं यशकोप्रकाश केशौदास उरआनिये। मदनक-
दनसुत बदन रदनकैसो बिघन बिनाशनकोबिधिपहिं-
चानिये ३ बारन बदनसोहै एकही रदनजाके सुखमा
सदन सोसहाय कर सत्यके। दारिद दहन सुरतरु को
गहनऐसो मूषक वहन बिदहन खलमतिके॥ सबसुख
सागर गुणागर उजागर है बुधिबर नागर देवैया
शुभगतिके। बिमलकरन ज्ञान ध्यानधरि शिवनाथ
संकट हरण ये चरण गणपतिके४॥ कबित्तभगवती॥ बा-
नी जगरानीकी उदारता बखानीजाय ऐसीमति उदित
उदार कौनकी भई। देवता प्रसिद्ध सिद्धि ऋषिराज
तपवृद्ध कहिकहि हारे सब कहिना कहूं लई॥ भावी
भूत वर्त्तमान जगत बखानत है केशोदास कहैना बखा
निकाहूपैगई। भनैपति चारिमुख पूतभनैपांचमुख ना-
तीभनै षटमुख तदपि नईनई १ मलयज गाराकरैं ब-
सन सुधाराकरैं गुहिउरडाराकरैं लरैमुकतानकी। पां-

बड़ेपसाराकरैं पंखाचौरढाराकरैं छाहैंबिस्ताराकरैं बिशदबितानकी ॥ सुखको निहाराकरैं दुखकोबिसाराकरैं मनसा इशाराकरैं सारा अँखियानकी। माणिकप्रदीपन सों थारा साजि ताराजूकी आरती उताराकरैं दारा देवतानकी २ जहां अम्बु आसनवृषासन खगासन गणेश शेश आसन सिंहासन तरेरहैं। तापर स्वरूपहै अनन्त ब्रह्म रूपणीको चंद ह्वै बितान छांह शीशपै करे रहैं ॥ श्रीपति सुजानकहै चरण शरणाता केचाकरसे द्वादश दिवाकर खड़ेरहैं। धनाधीशमन्दिर के द्वारपै कलन्दर से बंदर से बाहर पुरंदर परे रहैं ३ तोहींको भजत देवबिवेदाविष्णु शंकरसो तोहींछीनदा चरकेमुंड भटकतिहै। तोहींसुर रक्षक असुर वृंदभक्षक सो तोहीं रक्त बीजको रुधिर घटकतिहै॥ शंकर भनत एक तोहीं है प्रसिद्धजग तेरी शक्ति मनमेंन काहू भटकतिहै। पालिनीसो भक्तजन दाहिनीसदाही रहैशत्रुन बिपक्षकार दंडपटकतिहै ४ ॥ कबित्तबसंतपंचमी॥
आजुशुभमाघकी बसंतपंचमीहैप्रभु बंदीजनबौरदैअनंद कोबढ़ायोहै। आजुहीते ढोलडफतालकी अवाजहोत आजुहीते गारिनके राग सरसायोहै॥ माधव कहत रंगलै गुलाल आजुहीते लोगन गलीन बीच कीचको मचायो है। सुखद संयोगिन को दुखद बियोगिन को पंचबाण आपनो अबलसरसायो है १ आजु ब्रज नारी सब करिकै तयारी पैन्हिपीतपट सारी जरतारी की सवांरी है। नैनकजरारी आड़ मृगमदवारी बेंदी

भालछबि न्यारी मांग मोतिन की धारी है ॥ माधव कहैरीमंजुबौर धरिथारीकर गहे पिचकारी लैगुलाल रंगवारीहैं। जानिशुभकारी माघपंचमी बिचार किये उतसाहभारी नंदलालपैसिधारी है २ फरशबसंतीतामें तकियाबसंतीधरपर दाबसंती छति छाजत बसंती है। चीराहैबसंती अंगजामाहै बसंती कटिफेंटाहै बसंतीपद श्रानहूं बसंतीहै ॥ गजराबसंती अंगरागहु बसंतीसबसा-जहु बसंती माधोकहत बसंतीहै। रागहै बसंती ताल बजतबसंती नंदलाल भे बसंती जानि पंचमीबसंतीहै ३ आजुहीते साजुऋतुराज की अनोखो भई आजुहीते ओखीभई नारी बिनकंतकी। आजुहीते आनँदबधाये देशदेशनमें आजुहीते गावैंनर रागिनीहसंतकी ॥ आ जुहीते औरैरंग औरैराग औरैबाग बिहंग समाज औ रै ओरै भैंार पंतकी। होरी नव गोरी के मिलापकी बधाई लाय आई अदभुतआज पंचमी बसंतकी ४ ॥

फागवर्णन ॥ खेलबेकोफाग देवदारासी उतरिआई दीरघ दृगन देखि लागतीन पलकैं। खुलत दुकूल भुजमूलदर शतबर उन्नत उरोजहार हीरनके हलकैं॥ बेनीकबिभू पर धरतपद मंदमंद आननके ऊपरअनूप छबि छलकैं। लाललाल रंगभरी यौबनतरंगभरी बालभरी आनँदगुला लभरीअलकैं १ सकैसंग धाय नंदलाल औगुलालदोऊ दृगनगयेरी उरआनँद बढ़ैनहीं। धोयधोयहारीपदमा-कर तिहारी सौंह अबतो उपाय कछूचित्तमेंचढ़ैनहीं॥ कहांजाउं कैसीकरूं कौनसुनैकासों कहैं यतन बतावो

जाते दरद बढ़ैनहीं । एरीमेरी बीरजैसेतैसे इन आंखिन सों कढ़िगो अबीरपै अहीरको कढ़ैनहीं २ केसरि सुरंगहूके रंगमें रँगैगोगीआज औरगुरुलोगनकी लाज परिहेलिबो । गाइबो बजाइबोजू नाचिबो नचाइबो जू रस बशहवैके हमसबी खेल खेलिबो ॥ ठाकुर कहत और होनीतौ लहैंगीबीर एक अनहोनी कहौ कौनी बिधि झेलिबो । कर कुच पेलिबो गरे में भुज मेलिबो जो ऐसी होरी खेलिबो तौ हमतौ न खेलिबो ३ आईफागु खेलिकैसुकेलिसुखसासुहे सों सुंदर सुघरीसों सनेहसर सावैहै । केसरिके रंगभीनी चूनरी सुरंगरंग अंगनअनंग की तरंग दरशावै है । राजत अनोखो आधो बदन गुलालमढ़ो कहर्तकिशोरसों अनूपछबिछावैहै । अमल अभंग आछो युतउतसाह मानो अरुणघटाते शशिनिकसतआवैहै४ ॥ षटऋतुबर्णनबसंतऋतु ॥ मधुमतवारेभारेमधु मधुगुंजरत देखि गुणीजन गीत गावत उमाहके । कोकिलनकीबबोलैं करतकलोलैंआगे पौनहरकालेआले छूटे चितचाहके ॥ सोहनसोकबिकहै शिशिर तगीरी कीन्हो वशकरिलीन्हौदेशरहेना उमाह के । यहजिय जानुमानु करु ना गुमानुआलीडेरा परे बागन बसंतबादशाहके १ भौंरनके पुंजआगे गुंजरत कुंजरसे कोकिल नकीबसों कुहुकिउठिधायोहै ।किंशुक निशानसेलसत आसमानछवैछवैबोरबरछीनसों अधिकरूपछायोहै ॥ मोहनसोंकबिकाम कारीगर कोपकरि त्रिविधसमीर सोई सुरंगचलायोहै॥ माननी गनीमनकेमानगढ़ तोड़िबे

कोसकलसमाजसोंबसंतराज आयेहै ३गिरिनगीरी करिआनँद अमीरी पाय कीन्हो प्रतिझारदफतर सब रहीहै। बिरहपुरामें निज अमल लिखायलीन्हो हरे हरेचातुरीसों चौहद चौहद्दीहै॥ कोकिलनकीबनबीश हदनकी बद्दी बदि गैंदनकी गिलमें गुलाबनकीगद्दीहै। भेंटलै मिलौरी आलीटूटिगो गुमानगढ़ काम बादशाह के बसंतमुतसद्दीहै ३ डारद्रुमबागन बिछौना बनापल्लव को सुमन झँगुला सोहैछबि तनभारीदै। पवनझुलावै केकीकीरबतलावै देवकोकिल हँसावैहुलसावैकरतारी दै। उड़तपराग सो उतारोकरै राईनोन कंजकलीनाय-कालतान शिरतारीदै॥ मदनमहीपजूको बालकबसंत ताहि प्रातही खेलावत गुलाबचटकारीदै ४॥ ग्रीष्मऋतु वर्णन॥ जेठकी ज्वालनि ज्वलै मृगजल हलै तैसे पौनचलै ज्वालिम ज्वालाकनके ज्वारेसे। कहैगिरिधारी जीवजंतु तेअनंत तेवै जहांतहां छपेसबै तपे भौनभारेसे॥ अन्दरन नृपतिबिप्रति परीबंदरन रहेदति दंदरन सरपसंहारेसे। मंदरन सिंदुर मदांधधूपधंधरनकंदरन कोलभील कल्हरैं कल्हारेसे १ तपतप्रचंड मारतंड महिमंडल में ग्रीषमकी तीखनि तपनिवारापारहैं। कहै गिरिधारी कीचकांचसीदहनलागीभयेनदीनदनीरअदहनधारहैं॥ झपटै चहूंघासी लपटै लपेटै लूक फनीकीसी फूक पौन फूकनकी झारहैं॥ अवांसी अटारीतपी तवासी अवनि सहा दावासे महल औ पजावासे पहारहैं२ तेज सरसानेभानुभूगिरिधिकानेभूरिधूरिकेउड़ानेदिगधुंधुरि

दिखाने हैं। पौनके झझाने झूक आगि जनुसाने बनझाड़ झरसाने सर सकलसुखानेहैं॥ कोलकहलाने सबजीव अकुलाने अति आतप अघाने भाजि छांहन छपाने हैं। अंदर दुराने तहखाने खसखाने लोग सून कबिताने इमिग्रीषमबखांनेहैं ३ सूखेसर सरितासनाका सिंधुबेलालग्र तीर्थनिधिकानी धराभूधरबखाने और। शाखनमें शाखामृग शाकुन ससेटेसमदंती मतवारे जारे आनि लभ्भकोराझोर॥ कहैंअवधेश कैसे बीतत बियो-गिनकी दावानल दौरधों बिलोक्यो मीशई छकोर। कहलमचीहै कोल कच्छपककोदरलौंउठग्रारस्मजूकी उष्मारसमैंबढ़ीहैंजोर ४॥ वर्षाऋतुवर्णन ॥ मूंदिडारु झांझरे झरीखेद्वार नाबदानपवन न आवैमेरो दरदबटावोरी। जेते आसपास बागबने हैं सुगंधनके तेते अबजाय जरा सूरते कटावोरी॥ बेनीकबिकहै जोकलापिनसों राखा चहो पापी पपिहाको यहि देशते हटावोरी। पिया गुणानगावो नसुनावो शोर मोरन की घटा ना दिखा वो बेगिआंगन पटावोरी १ कैधौं बिषधर खाई सीच आई मोरनको भूतल प्रकटपरी कीचहू नईनई। कैधौं दौरि दादुर गयोदबि दरारनमें पापीपपिहाकी चोंच पावक दहीदई॥ घासीराम बाक बक बाजनीको शास मानि कैधौं वहिदेश बीर पावस ठईनई। कैधौं काम श्यामजू के अंगते निकारिगयो जूझिगयो मेघ कैधौं बीजुरी सतीभई २ कैधौं वहि देश में हमेश बरसत मेह कैधौं निजदेश वेश बादर निसरिगो। कैधौं बक

दादुरन दामिनी दिखाइदेत कैधौं पिक चातक मयूर गरपरिगो ॥ कैधौं हैनकागद कलमकी रवैयेउहांकैधौं शिवगुलामजू धवैये कहूं धरिगो । कैधौं उन गावन में सावन सुहावनना कैधौं मनभावनको आवन बिसरिगो३ लगी सो लगाय लंक लोयन खराबकरो मारिकरी मोरन अहार मारजारेको । सुकबि निहाल इनआंगु-रिन मूंदिमूंदि सुनिहैां न शोरघोर झिल्लीझनकारेको। भेखनकी भीर सहसानन समेटिडारो मेटिडारो गरब गरूर घनकारेको । जालसों जकरि कहूं पावें जोपक रिपंख फीहाफीहा करों या पपीहा दईमारेको ४ ॥

शरदऋतुबर्णन ॥ ॥ फूले आस पास कास बिमल अकासभ-यो रही न निशानी कहूं महिमें गरदकी । गुंजत कमल दल ऊपर मधुप मैन छापसी दिखाई आनि बिरहाफ रदकी ॥ श्रीपति रसिकलाल आली बनमाली बिन क छूना उपाय मेरोजयके दरदकी । हरद समान तनजरद भयोरी मोहिं गरद करत चारु चांदनी शरदकी १ ॥ शरद प्रकास भई पावसकी आसगई कातिक के मास जूह वारिद बिलात है । आस पास कास गुलाबास बृन्द फूले देखि सेज पै करेजे शूलहोत रैंनिजात है ॥ ऐसही बिथामें कंत आयके पुकार्यो द्वार सुनिके अवाजभयो हर्षयुत गातहै । सुधि बुधि छांडीदौरि खोलतकिवांडी ब्रज सांवरे बिहारी मिलि प्यारी मुसकात है २ अमल अकाश उदै कुम्भज सितारे तारेतारेपति तैसी प्रभा सक ल सिहातेहैं ॥ सलिलसुखाने बीथी बिमल पयानेसाह

उदितउछाह तुंगतम्बू तरताते हैं। कहैअवधेश शोभा विशदविलोकि भूमिखंजनदेखाने याते शारद खहाते हैं कहूंकहूंविहत बलाहक बिलानलागे पदुमपरागलैलै अनिलउड़ाते हैं ३ कासभयो कानन में कछुकविकास योग स्वाती आस चातक विषादकछू नास भयो। नास भयोमृग दुखजन हरदासकहैं आनंद चकोरनको चोरन त्रासभयो॥ वासभयो शरदशरद की अवाई जानि नी-लग्रास खंजनको नगर निवास भयो। वासभयो सुखद सुवासको जलज मध्य कुंभजको प्रकट अकासमें प्रकास भयो॥ ४ हिमऋतु वर्णन॥ आछी अति कोठरी सवांरी सेजसाधे सन आस पास भीतर कपूर बगरे रहैं। द्वार परे परदे गलीचन सों ढांपीभूमि जरैदीप दीपन सोआ-नंद भरे रहैं॥ ताही समय कंत संग युवती हेमंत ऋतु पौढे पलका पै दोऊ आनँद भरे रहैं। शीत दुखद पटे सनेह सुखचपटे सो लपटे दुशालन में छपटे परेरहैं १ रावटी रँगीली पैरँगीलैं दीपदान दीपैं दावैंदीह परदेस-स्वरी छिति छाईहै। कहै अवधेश तैसी फरस गलीच-नकी आले आले सकल दुशालन सजाई है॥ उचउर कंडनकी प्रमदा प्रमोदें काम मीरीअंग राग जासों उठै उष्णाई है। ठांव ठांव हौजभरे हलकैं हमानन के हरय हमेशा होत हिमऋतु आई है २ काले तनवाले भौन वालेसशालालेकंठ कालेकर कौलते विशालेछबि वा-लेरी। आले बनमाले जनपाले बलशाले खलघाले रस जाले सो कसाले निपटा लेरी॥ पाले हिमवाले सों ब-

चाले मनवाले बाल शाले औ दुशाले उरमाले सों उठा-
लेरी। आंगी खसकाले मगिमाले को उठाले ब्रजबाले
नंदलालको हियाले लपटालेरी ३ अगरकी धूपमृग
मदकी सुगन्धवर बसन विशाल जाल अंग ढांकियतु
है। कहै पदमाकर सुपौनको न गौन जहां ऐसे भौन
उमँगि उमंग छाकियतु है॥ भोग औ सँयोग हित सु-
ऋतु हे मंतहीमें येते और सुखद सुहायेवांकियतु है।
तानकी तरंग तरुणापन तरागोतेज तेल तूलतरुगात
मालताकि यतुहै ४ शिशिरऋतु बर्णन॥ वारियां महलकी
नहलकी मुंदीहैं जहां रासैंपरमलकी अँगीठियांअनल
की। जोतैंमोम भलकी चिगैरैंहैं नकुलकी जोप्याालि
यां अमलकी पलँगैं मखमलकी॥ ग्वालकवि थलकी
लचीली लंकबलकी वो फूल समहलको प्रभासैं भला
भलकी। बिपरीत ललकी कहैको बात कलकी सो
बालै छबि छलकी दुशालेमें उछलकी १ आड़ेनारहत
रूमठाढ़ेही रहत सदा पश्चिमकी पाय पौन पालासों
फटतुहै। कांपत करेज सेज सोइबो सुखद कहा गरम
गवांरकी गरूरता घटतुहै॥ बेनीकबिकहै पांयपानीके
परसहोत पीरसी उठतनेम नाहीं निपटतु है। ओढ़िये
दुशाला तरे तोशक बिशाला बिनालागे अंगबाला
शीतकाला ना कटतुहै २ दरदर भांपै और थरथर ढांपै
तऊ थर२कांपै अंगबजत बतीसीजाय। फेरि सखतूलन
के चोहरेगलीचनपै सेजमखमली सोहै सोऊ शरदीसी
जाय।ग्वालकबिकहै मृगमदके धुकायेधूम बरतअंगी-

ठीतामें आगिहह्छपीसीजाय॥ छाके सुरासीसी आनि सीसीसी मिटैंगी जौलैां कुच उकसीसी छाती छाती सोंन सीखीजाय ३ नारीबिन होतनर नारी बिन होत नर रातिसियराति उरलाये पयोधरमें। बेनीकवि शीत लसमीरकी सनाका सुनि सांझहीते सोवत कपाट दै सदनमें॥ पक्षीपर जोरेरहे फूलफल थोरेरहे पालाको प्रकासआस पास धरातलमें। बसन लपेटेरहे तऊजानु पेटैरहेशिशिर ससेटेरहे लेटेरहे घरमें ४ अथ षट्अंगवर्णन॥ प्रथमपदवर्णन॥गंगाजीके जलमध्य कंठकेप्रमाणपैठि जपि जपि सूर मंत्र आनंद बढ़ावही। केशौदास घामजल शीतसहेएकरस ठाढ़ेएकपांय कोटिकलपै नशावहो॥ कोमलअमलभये सुंदर सुबास भये कमल निवास मन यदपि भ्रमावही। पायो बरु ब्रह्मपद पदमिनी पद- मिनी तेरेपद पदवीकोपद पैन पावही १ मंदहू चपतइंदु बधुके बरण होतप्यारी के चरण नवनीत हूते नरमें। सहज ललाई बरणी न जाय काशीराम चुईसी परत छबियाते मति भरमें॥ येरी ठकुराइनि की नाइन गहत जब ईंगुरसों रंगदौरि जात दरबरमें। दियो है कि दीवहै बिचारि शोचै बारबार बावरीसी होरही महावरी लै करमें २ बिम्ब में प्रबाल में न ईंगुर गु- लालमें न जपा पुहुपमाल में नकिन चित निहारे मैं। दाड़िम प्रसूनमें नसून धरासूनमें न इंद्रकी बधूनमें न गुंज अँखियारेमें॥ हैकुसुम्भारंगमेंन किंशुक पतंगमेंन जाव- कसजीठ कंज पुंजवारि डारेमैं। राधिका तिहारे पग

अरुणा समताको हेरिहारे कबितान पावत बिचारे
मैं३ जगमगे जावक जगीले जरबीले कैधैं ऊपरतेभूपर
प्रभाकर प्रभालची।गरदबिहीन कैधैं शारदसरोजपुंज
कैधैं छबि छायेसे बनाये बिधिलालची ॥ भौनकबि
कहैरंगरतिके हरौलकैधैं निकसे निवेरिगति गतिके
विशालची। तरुणातिहारे पग जगमग होतकैधैं जग
के जलूसमैंनभगके मसालची १ ॥ अथकटिबर्णन ॥ कोऊ
कहैकैधैंतत्त्व चारिके चुकेपैले अकाशहीसों कीन्हें
चतुरानन चकरिहै। कोऊकहै कौनौ छलछन्दहै कहत
कोऊ बिधनै बनावत बिसारेउ हरबरिहै ॥ तेरोईसो
तनतोही जानैना जनेउकीसो भेऊपायो महीहै गोबिं
दमन धरिहै। नाभिमन करणी तरंगिणी त्रिबलिकुच
शम्भुलग पायेकैं मुकुति पाई करिहै १ उन्नत उरोजन
को भारबेशुमार कौन करत बिचारपार बिगतअसार
मैं। नजरि न आयोध्यान धीरज लगावै गहे अंकहू न
पावैं कहूंकामकेबिहारमैं ॥ भौनकबि कहै तिथिबार
औलगन जैसे प्रकटन होत बिन ज्योतिष निहारमैं।
ब्रह्मके स्वरूपते महीन कटितेरी येरीहांकरे किना
करे सोना परै बिचारमैं २ भूतकी मिठाई जैसी सांचे
को भुंठाई जैसी स्यारकी ढिठाई जैसी छीन छहरतु
है।धीरकैसोह ंसकेशोदासदास कैसोसुख शूरकैसी शंक
अंक रंक कैसो वितुहै॥ सूमकैसो दानमति मूढ़ कैसो
ज्ञान गौरीगौर कैसो मान मेरेजान समुदितु है। कौने
है सवाँरी वृषभानकी कुमारीप्यारी तेरीकटि निपट

लखि कंजफूल फीकोहै । मैनकी मनीकोनैन बान की अनीकोबैन चोखेरस नीकोहौस हुलसनहीकोहै ॥ रूप रमनीको कहा रमारमनीको गजगति गमनीको सिंह जीवन सोजीको है । बेंदीवन्दनीको मन्दहासफन्दनी-कोमुख चन्दहूतेनीको वृषभान नन्दनीको है ४ ॥

अथ नेत्रवर्णनम् ॥ ऐसमैनतीके हैं न और जगतीके पैनरक हू गनीकेहैं न देखे हरनीके हैं । नाहीं नैनगीके बरलसै पन्नगीकेमन मैनकाज नीकेनैन बानहू अनीके हैं ॥ उपमा नफीके बर सुखमा घनीके हमदेखे हैं नवीके मन मोहन भनीके हैं । मीन हैं न ठीके खंजरीटहू कहीके भोर रंकजहूते नीके नैन गोप नन्दनीके हैं १ सान धरी सुन्दर कृपानसी कही न जात बानहूते बेधक बिशेष दरशावती । कैदकै कटाक्षनसों किम्मति करन की हिम्मति हजारनकी हरथ हरावती ॥ भौनकबि कहैचारु चिकनी चवाइन में चंचल चलाक चोटऔ-चक बचावती । ऐसी अनियारी अँखियान में अंजन आंजि आंगुरी अजब वै अटाक बचि आवती २ भृकुटी चढ़ीके योधा मैनकी गढ़ीकेसौति दोयक दढ़ीके रंग करत रदीसे हैं । भणात कबिन्द्र चन्द्रमाकी ओर चाहकारि उपमा चकोर मति पावत कदीसे हैं ॥ कोकनद मुद्रित मलीने मृगसीनेमीन खंजननवीने हेरिहारे तेहदीसेहैं । ईश्वाके अशीसेपै कमानके कशीसे मैनमदके मदीसे नैन तेरेसेनदीसे हैं ३ ॥ एकई झपाके में छपाके मनमोहैदृग ऐसे मारुमाके ना रमाके ना उमा के हैं ।

हैं । दशहूदिशा के मनसाके फल देनहारे कारन निशा
के ईसि ताके अब काके हैं ॥ आपके जहांकेतहां मीन
जल ढांकेगये हरिन हरीनहांके कवल कहांके हैं । सद
नसमाके सुखमाके उपमाके चारु चंचल चलांके नैन
बांके राधिकाके हैं ४ ॥ अथ केशवर्णनम् ॥ श्रीपति सेवार
कैसे सोहत शृङ्गार जैसे सोहत शृङ्गार कैसे जैसे तम
भारहैं । तमनकी धारकैसे मरकतसार जैसेमरकतसार
कैसेजैसेघनभारहैं ॥ घननके भारकैसे मोरपखवार जैसे
मोरपखवार कैसे जैसे अलिहार हैं । अलिनके हारकैसे
पन्नग कुमार जैसे पन्नग कुमारकैसे जैसे तेरेबार हैं १
तमतम तामसमसादिपर तोयदसी नीलक जटासपाट
जटि प्रजटीसी है । पजत प्रकन्दरप दीपक शिखासी
चारु हाटक फटिक ओप चटकि फटीसीहै ॥ कचकुच
दुबिच बिचिचक्षतचकवेथ छूटी लटपाटी घटतट उप
टोभी है । विरह अशुअपस तीतन प्रदीपपाय पन्नगी
पिताकी पटपाज पलटीसी है २ सुन्दर सजीले पर
लच्छसहजीले राधेपरमलजीले शुभ कजन कजीले हैं ।
बैलिनबसीले अलिअवलिन हँसीले रूपयश में यमीले
आदि रस मेरसीले हैं ॥ नेहपरभीले परनेह सरभीले
अननैन चमकीले चहकीले चटकीले हैं । तेरेकच नीले
छूटि छबिसों छबीले मानो पन्नग नगीले मैं मन्थवत
कीले हैं ३ पीठितल ताकतही डीठि डसिलेत आली
फैलिकै बिरहबिष रोमरोम वावतो । समाक में ऐसे
हाल होतेना कितेवानके कोऊ येते गाडुरी कहांते हूं

खिलावतो ॥ ईश्वर होहाई कहूं होती वाकी ग्वालि
नी तो काली के नथैया कान्ह काहे को कहावतो।
मुरि मुसक्यानि मंत्र जानती न राधे जोतौ बेनीकेडसन
अजवलन न पावतो ४ ॥ अथ शृंगाररसवर्णनम ॥ चरणा के
अज तन सरस कुसुमरंग चम्पा के बरसा तन गंधजुही
जैनहै। नारंगीसी मंडी औ उरोज बने श्रीफलसे बिम्ब
से अधर दंत दाड़िम बिजैनहै ॥ अलि कैसा केशरंग
कीरकैसी नासिका है कंठतो कपोत कैसा कोकिला
के बैनहै। गति गजराज कैसी कटि मृगराजकैसी हा
थकैसा घूंघट हरिन कैसे नैन है १ चम्पक कली सी
खिली अली अवलीमैं वृषभानकी गली मैं चलीजात
पंथ पेखीमैं ॥ कामअवलासी कलाधरकी कलासी ल
लालासीलिये कनक लतासी अवरेखी मैं। खिवलाल
ताखिन ते आंखिन ते वाकी चाल हरत न टारे चारु
हंसकी बिसेखीमैं। छबि तनुजासी छबि दीपके उ
जासी पंचबान के भुजासी सिंधुजासी जात देखीमैं २
वानी कहिये तो वह बीनाको लियेई रहे गौरी तो
गिरीश अरधांग में लगाई है। कमलान कान्हकेहि
येते उतरत अरु रम्भामें तो येती नहीं रूप अधिकाई
है ॥ रति कहियेतौ अति प्रौढ़ा अवहीं है अरु यामें
तो अजौंलग काहुक लरिकाई है। फेरि फेरि बेर
सि हेरि हेरि हार्यो रूप जानि ना परति यह कौं
कहां पाई है ३ केशरि को गारलै सिंगारुभरिभंगारु
ना निकारु देह दीपति मनोहर मरालकी। ऐसे कस

नीको लगै अमल अमोल तन खुलीशोभा सहज अनूप रूप जालकी॥ कहै गिरिधारी श्याम सारिही सँवारे एक बार नेक अनेकछबि भूषण बिशालकी। मातु करै आली वह मृग मदवाली आड़ सौति मदगंजनीहै अंजनी गोपालकी ४॥ अथ संयोग शृंगार वर्णनम्॥ अतर लजात मृग मद पछितात जात वारिजात हारिजात सौरभ सतत है। श्रीपति अगार में अगर उदगार ऐसी डगर बगर छबि छाजत अनन्तहै॥ हीकरनसुख सुख सौतिन ससी करन बदन जसीकरन जीकरनयंत्र है। पति सों रसीकरन रतिको हँसीकरन सीकरन प्यारी को बसीकरन मंत्रहै १ चन्द्रद्युति मन्दभई फंदमें फँसीहैं आनि ननद करैगी शोरछोड़ि गलबाहं दै। सासु सतरै है जेठ पतिनी रिसै है बंकबचन सुनैहै अरे जोरि युगपाणिदै॥ नौलौहै गिनती औ बिनती हहालौ देव कियो कहा चाहत रहानि कुलकानिदै। दानदेरे जानको निदान निर्दई कान्ह बसी सारी रैनि मोहिं अब घरजानदै २ कुन्दकी कलीसी दंत पंक्तिकी सुदीसी दीसी बीचबीचमीसीरेखअमीसी गरकिजात। बोरीत्योंरचीसी बिरचीसी तिरछीसी लखैरीसीअँखियाकैसफरीसी वै फरकिजात॥ रसकी नदीसी दया निधिको नदीसी थाह चकित अरीसी रति डरीसी सरकिजात। ज्यौंफँद फँसीसी ऐसी होतिजो कसीसी ताकेसीसीकरबे में सुधासीसीसीढरकिजात ३ सोयेसब लोग तुम आये भले योग मेटो बिरहबियोग उरआनँद

लपटकै । काहूकोन डरौ परयंक मिलि परौ परिरंभ प्यारे पारैंतुम्हैं कैसे कोऊ हटकै ॥ लीलाधर पीतपट न्यारोकरि धरो बनमाल परिहरौ जामें नेकहू न अट कै । देहरीकी वा तरफ केहरि ननदपरी येहरि सँभा रूपग जेहरि न खटकै ४ ॥ अथ वियोगश्रृंगार वर्णनम् ॥ ऊब तहैं। डूबतहैं। डगतहैं। डोलतहैं। बोलत न काहे प्रीति रीति न रितै चलै। कहै पदमाकर त्यों उससि उसास त्रसों आँसू वै अपार आय आँखिन इतैचलै ॥ औधि हीके आगम लौं रहत बनेतौरहौबीचही क्योंबैरीबन्धु वेदन बितैचलै । येरे मेरे प्राण कान्हप्यारेके चलाच लमैं तबतौ चले न अब चाहत चितैचलै १ प्राण प्या रोगेहते पयानकरि गयो आली मानो मेरीदेहते पयान प्रानकरिगे । कहै गिरिधारी तबहींते सुधि बुधि गई आनँद विनोदनके मन्दिर उजरिगे ॥ जाकेअंगलागि लूट्यो अमितअनंगसुख अंगते बिरहज्वाल जालन से जरिगे । जासों कबौं अंतर न हारनके परेहाय तासों अब अंतर पहारन के परिगे २ श्याम श्याम सघन बिराजैंघनचारोंओर कौंधा बहुतरल गगनबीच छ- हरै । दादुर औ मोर चहूँओरनते शोरकरैं महीमहि मण्डलमें महाजल लहरै ॥ प्रीतमप्रबास तासों दाहत वियोगी बाल कीन्होंजु अनंगजोर बैठी अटाकहरै । छिनकमैं पौढ़ै छिन बैठै परयंकपर छिनक में करै हाय हाय उठि टहरै ३ आई सुधिपीतम की भूली सुधि और सब कौन समुझावैना सहेलीकोऊसाथमैं ।

अतिही दुचित्त चित्त लाये सूने सदन मैं बैठी प्यारी धरिकै बदन एक हाथमैं ॥ चित्रकैसी लिखीनेक डोलति न बोलति न बिरह की मोटधरि दीन्हीं बिधि माथमैं। सुनत न बात सूनेहोगये सकलगात बैठीध्यान कीन्हें मन दीन्हें प्राणनाथ मैं ४ ॥ अथहास्यरस वर्णनम् ॥ हँसी हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बरको पाहुनी जे आवैं हिमाचलके उछाह मैं। कहै पदमाकर सुकाहू सों कहै को कहा जोई जहां देखै सोहँसेई तहां राह मैं॥ मगनभयेई हँसै नगन महेश ठाढ़े औरै हँसें येऊ हँसाहाँसिके उछाह मैं। शीशपर गंगाहँसै भुजन भुजंगा हँसै हाँसिहीको दंगाभयो नंगाके विवाह मैं ॥ अंबर लै सबके कदम्ब चढ़ि बैठोजाय हास्यरसमाहीं कबौं नाहीं कबौं हां करै। कहै गिरिधारी नीचे खड़ी ब्रज नारी सब अंगन उघारी बनवारीसों हहाकरै ॥ हाथ जोरि करैं दिननाथ को नमस्कार कहै ब्रजनाथ तौजू तुम्हरोकहाकरै। बिना रबि बंदनन देहैंदोऊकरजोरि बंदन करौतौ देय बसन बिदाकरै २ कहा कहौं नाथ कलिकालको जितैहैंनहीं जानिये कितैहैंनेक सुनतनहां करी।कविशिवलालदोषदीजै कौनन्यावविन हाथपांव होकैंजिनकाठकीभगाकरी। बिनडेरकीन्हेंमहापातक अनेकहम घातक यमनहूंतेलगी औलगाकरी। पावन पतित झूठीकीरति सुनायतेरी हायमेरो बेदन पुरानन दगाकरी ३ लक्षण तिहारे तौ प्रतक्षण लखैपरै बड़े २ रूमलखि लाखमैंन दुरतो। सांपबैलबाघ बियराखमूढ़

बांधेफिरौ गंगको प्रवाहहेरि हुबइतेभुरतो ॥ घासी रामसुकवि देवइया हरहोते कहां चंदजातो सिकिल न एको रंगघुरतो । गौरिजोनहोती अरधंगमेंगिरीश कोसो सांचीसुनौ भूतनाथ खयबेको न जुरतो ४॥ अथ करुणारसलिख्यते ॥ आंसुन अन्हाय हायहायकै कहत सब औधपुरबासीके कहायो दुख दाइये । कहैपदमाकर जलूस युवराजीको सुऐसोकोधनीहै जायजाके शीश बाहिये॥सुतकेपयानदशरथनेतजे जोप्रानबाढ्योशोक सिंधुसो कहांलौंऔगाहिये । सूढमंथराकेकहे बनको जो भजेराम ऐसी यहबात कैकयोकोतौ न चाहियै १ अक्रूर गोहन चलत मनमोहनके बहुधा बिछोहन के बीजनको बोवती । कहैंगिरिधारी धीरधारिननाधारी धीर करुणा गंभीर ब्रजमंडलविगोवती ॥ नंदकी यशो मतिकीगोपनकी गोपिनकी बिपति बखानै कौन आं सुनसों धोवती। चोखतीनलैया चाराचरती न गैया सिलि जलकीगिरैया औचिरैया बनरोवती २ कदम की डालीचढ़िकूद औबनमाली कोपिकालीदहभीतर बियोगबीज ह्वैगयो । कहैंगिरिधारीधायेनगरकेनारी नर भईभीर भारी नीरनैननतेच्वैगयो ॥ नन्द नँदरानी अररानीपरैं पानीबीच ओकओक अररस शोकबीज ह्वैगयो । यमुनासमानो आजु ब्रजको सतन हाय यशु मति सूनबिन सूनब्रजह्वैगयो ३ कामरीपरीहै कहूं ल-कुटीडरीहै कहूं बांसुरीधरीहै अब इन्हैं कौनधरिहै । कहैं गिरिधारी कोरचैगो रसरासके न विरचिबिलास

वृन्दावन में बिहरिहैं ॥ यशुमतिरानी दीन बानीसों कहत आजु गोरसके काज कौन मोसोंआनि अरिहै। संग ग्वालबालन के खेलि है को ख्यालनको लालन बिनारी गोपालनकोकरिहै ४॥ अथपुनःकरुणारस ॥ ग्राह गह्ने गजको अगाधै जल लियेजात त्राहि त्राहि भाषत भोभूरिभरेडरते। धायकै गोबिन्दआय फन्दते निफन्द कीन्हों दीन्हेंबाहबारनैसो काढ़िलीन्होंसरते॥ चन्दि काप्रसादजू बिचारकैदेवसब देख्योहम आवतनाभूमि धौंअधरते। वारितेमुरारि कैधौंकढ़ेग्राह आननते कंज तेनिकरि कैधौंआयेकरीकरते १ उठै कोपिकाले प्रल यकालवाले धाराधर शुण्डादण्ड धारेलगे धारैंचहूंओर पर। कहैं गिरिधारी अकुलाने ब्रजवासी सब पाहि पाहि आरत पुकारते निहोरपर॥ मोरपंखवारे रख वारे ब्रज गाइनके तोबिना न कोऊ रखवारो यहिठौर पर। छोभकरि छोहनीते उठायलीन्हों छोनीधर छा यदीन्हों छत्रसों कणुनियांकि छोरपर २ गौवैंग्वाल बाल अहिगालमें समानेजाय जानतनहुते ख्याल खल बल जूटको। कहैं गिरिधारी पीछे रहिगे अकेलेका न्ह करुणा निधान धरे करुणाधिकूट को॥ देवकी नँदन चलि बदन अघासुरके पैठेआय पैठतही कीन्हों यह ऊटको। ग्रीलके समानबढ़े फैलमेंफुलायेतन फू लिकै पानीको फन फाटिगयो फूटको ३ जानिपरी आनिकै अवाज कान्हजूके कान जानिजन आपनो अनाथकी पुकारथी। छोड़्यो सिंहासनऔ छांड़्यो

पन्नगासन औ छोड़यो गरुड़ासन सो धायो परमार थी ॥ नन्दन सों कविप्यारी कमला अकेली छांड़ि हाथन हथ्यार छोड़ो छोड़ो रथ सारथी । धाये ब्रज राज गजराजकी अरजजानि आयेचलि वाहीके मनो रथ महारथी ४ ॥ अथ रौद्ररसवर्णनम् ॥ बारि टारिडारों कुम्भकर्णहि बिदारिडारौं मारौं मेघनादै आजु जो बल अनन्तहौं । कहैं पदमाकर त्रिकूटहिकोढाहिडारौं डारत करेई यातुधानन को अंतहौं ॥ अच्छहिनिरच्छकपिरुच्छह्वैउचारौं इमि तोसे तिच्छ तुच्छनको कछूवैन गंतहौं । जारिडारौंलंकहि उजारिडारौं उपबन फारिडारौं रावनको तोमैं हनुमन्तहौं १ मारिडारौं अनुज समेत यहिखेत आजु मेटिडारौं दीरघ बचन निजगुरुको । सीतानाथ सीतासाथ बैठेदेखो छत्रतर यहि सुखसोखों शोक सबहीके उरको ॥ केशोदास सबिलास बिषविषे वासहोय केकयीके अंगअंग शोक पुत्रज्वरको । रघुराजजूको राज सकलछिड़ाइलेउँ भरतहिं आजु राजदेउँ प्रेत पुरको २ गोपिन सों कहत गोपाल दानदीन्हेंबिन जाननहिंपैहौ करौ केती उबरे सीको । कहैं गिरिधारी राजडेरहि सुनाय कहा मोहिं डरपार्बतिहौ डरत न ऐसीको ॥ जाके बल बिक्रम को तुमको गुमान ताको पलमेंमिटाऊं बलबिक्रमकी वेसीको । मातुलहि पछारिडारौं फारिडारौं मुष्टिकहि मारिडारौं कंसहि संहारिडारौं केसीको ३ प्यारो रामचन्द्र को अनैरो दूत कोप्योबीर जासोंबल बाजीलागा प्रभु

के प्रमानकी। भनै भगिवंत लागी रावनै उदासी सब देवन सुधासी हांकहोत हनुमानकी॥ पूंछिमें न आंच लागी बाढ़िकै अकाश लागी आगिलागी देखिभागी भीर यातुधानकी। मयसुता शंकलागी प्रियादौरिअं-कलागी लंकलागी जरन जुड़ानलागी जानकी ४॥

अथ बीररस बर्णनम्॥ चरिओरसमुद बिहदनदहदकोन्हें दुरघट ओटकोट पाय पुरपरके। कठिन करालकाल दण्डते बिशालबली कोटिन कृपानगहे बीर निशिच रके॥ सहज अशंकबंक रहत निशंकसदा बरणौ कहां लौं कबिनन्द बरहरके। बैन कपिबरके सुनतहियहर के सोफरके उदण्ड भुजदण्ड रघुबर के १ सोहै अस्त्र बोड़े जेनछोड़े शीश संगरके लंगर लँगूर उच्चउचके उ तंकामैं। कहै पदमाकर त्यों हंकरत फुंकरत फैलत फुलात फाल बांधत फलंका मैं॥ आगे रघुबीर के स मीरकेतनैके संग तारीदै तड़ाक तड़ातड़के तमंका मैं। शंकादै दशाननको हंकादै सुबंकाबीर डंकादै बिजैको कपि कूदिपरे लंका मैं २ डहडहे डंकन के शबद निशं कसुन बहबहे शत्रुन के सैना आनि खरके। कबि हरिकेश इत चम्पतिकोलाल चढ्यो उतै तुरकान दल उमड़ि घुमड़िके॥ हाथीको उमड़माडूरायकी घुमड़त्यों त्यों लाली उघरत मुखछत्रशाल बरके। फरकिफरकि उठैभुजा अस्त्र बाहिबेको करकि करकि उठै कारि ब खतरके ३ दौड़ेकालकिंकर करालकरतारी देत दौरी कालीकिलकत क्षुधाके तरंगते। कहैं हरिकेश दांतपी

सत खवीसदौरै दौरै मगडरीक गीध गीदर उमंडते ॥ बी रजयसिंह जंग जालिम सुकौनपर फरकाई भुज औ चढ़ाई भौहँभंगते । भंगडारि मुखते भुजंगडारि भुजते हरषि हर दौरे गौरी डारि अरधंगते ४॥ अथ भयानकरस लिख्यते ॥ पूरि रह्यो पातकमें कलही कुचालीकूर का याभई कम्पित मलीन तनधारे को । देखि यमसौंहैं यमु नाकोलियो नामउन होत अन्तकाल नन्दलाल रूपधा रेको ॥ ग्वालकबि त्योंही यमभाख्यो हाय हाय करि कोऊ जनि जाऊ जो गयेतो मारिडारे को । दूरिकरि देगो दीह रौरवन मूंदिकरि चूरकरिदेगो अँग अखि ल हमारेको १ झलकत आवैझुंड झीलम झलानिझा प्यो तमकत आवैंतेग वाही औ सिलाही हैं । कहैं पद माकर त्यों दुंदुभी धुकारसुनि अकबकबोलैं योंगनीम औ गुनाहीहैं ॥ माधव को लाल कालहूते बिकराल साजि धायो सैनयेदई दईधौं कहा चाहीहै । कौनको कलेऊ धौं करैया भयो काल अरु कापै यों परैया भयो गजब इलाही है २ अति बिललानी यातुधानीक है गेहगेह रावन समान आन दूसरो अयानको । काहेते न बूझेउ आंखि बीसहू ना सूझेउजाको मूढ़मतिकोही द्रोहीभयो भगवान को ॥ सुकबि सुवंशकहै आनि ज गदम्बै लैंके निपट निशंके बंश नाश्यो यातुधान को । कार्ढ़ीकीश कल्ला कूदिबल्लाके समान परे रावणा मह ल्लापर हल्ला हनुमान को ३ माड़व उज्जैन भानि भूयन बहेलसेलौं सिंगलसरोज लौं परावने परत हैं । गौड़

बाने तिलगाने करनाटक फिरंगाने हफशाने हिम्मति
की हद्द हहरत है॥ साहू के सपूत शिवराज शमशेर
तेरी सुनि गढ़पती गढ़धीरता धरतहै। बीजापुरगोल
कुण्डा आगरे दिलीकेबीच बाजेबाजे दिन दरवाजे उ
घरत है ४॥ अथ विभत्सरस वर्णनम्॥ नटकी समान मर
कटभट भालुबहु दैत्यनके युत्थबीच चंटचट चटकत।
मारे खड्ग खूनन के घायबोलैं भकभक योगिनी ज
माति लोलू घटघटघटकत॥ सुकबि सुबंश कहै गिरे
गीध झुण्डनसों रुण्डन समेत मुण्ड गटगटगटकत। त
द्यपि तद्यपि तहां पौनतनय महाबीर असुर बिलन्द
महि पटपटपटकत १ कोपि नन्दजूके भट असुरअनन्त
नको मारि गजदन्तन बिदारि देहदई है। कहै गिरि
धारी एकपरे अंगभंग एके परेहैं अपंग क्षिति घायल
न छई है॥ मुष्टिक चाणूरकी है कहूंकंस कूरकी है
औरको गनावैं युत्थयुत्थनकी मईहै। शोणित सुरंग
तासों होरही सुरंगभूमि रंगभूमि आजु रणरंग भूमि
भईहै २ औझरीकी झोरीकन्धे अन्तनकी सेली बंधे
मुण्डन कमण्डल खप्परकियो फोरिकै। योगिनी ज
माति जोरि झुण्डबने तापससे तीरतीर बैठेहैं समरसरि
खोरिकै॥ शोणितसों सानिसानि गदासतुवासे खात
एकैएक पीवतबहोरि घोरिघोरिकै। तुलसी बैताल
भूत साथलिये भूतनाथ हेरिहेरि हँसत शिवासों हाथ
जोरिकै ३ शोणित सलिलबर बानर सलिलचर गिरि
बालिसुत बिष बिभीषण डारेहैं। चमर पताका बड़ी

बाड़वा अनलसम रोगारिपु जामवन्त केशवबिचारेहै॥ बाजिसुर बाजि सुरगजसे अनेकगज भरत सबन्धु इन्दु अमृत निहारे है। सोहत सहितशेष रामचन्द्र कुशलव जोतिकै समर सिन्धु सांचेही सिधारे है ४॥ अथ अद्भुत रसवर्णनम्॥ सातदिन सातराति करि उत्पातमहा मारुत झकोरै तरुतोरै दीहदुखमैं। कहैंपदमाकर करीत्योंधुम धारनहू एतेपै न कान्ह कहूं आयो रोयरुखमैं॥ छोरि छिगुनेकेछत्र ऐसो गिरि छायराख्यो ताकेतरेगाय गोपगोपी खरी सुखमैं। देखिदेखि मेघनकी सैन अकुलानीरहै सिन्धु में न पानी औ न पानी इन्द्रमुख में १ माटीखात मोहनको पायो कहूं मातुगहि सांटीडरपायो प्रीति परिपाटी टारिकै। कहै गिरिधारी मुख देखतही देखिपरे देखे अनदेखे सबलोक निरधारिकै॥ खम्भालागि शोचत अचम्भामानि छोहरेको अद्भुतरंग भरे कौतुक निहारिकै। यशुमति चापिरही रसनारद न नँदनन्दन दिखायो जबबदन पसारिकै २ एसतेडराय गृहलोगन छिपाय एक बूढ़ोजाय पापीगंगरोगनकेदंगाते। ताहीक्षण छूटिगयो पापसों पवित्रभयो सुखनके योग लाल तरलतरंगाते॥ धाय आपधनद बिमानलै प्रथमनन्दी धाई आठौंसिधिधाय धारके प्रसंगाते। भंग भरे मुखमें भुजंगधरे अंगवह गंगाधरे शीशपै निकसि आयोगंगाते ३ गोरीगरबीली जाको गमन गयंदकोसो गरे मुकताहलको गजरा निरालावह। कज्जल कलित दृग ललितलोनाई भरे बलित उरोजनमें मृगमदआला

वइ ॥ ग्वालकबि रविजा तिहारेतीरन्हाई आई धाई लेनदेवनकी अवलि बिशालावह। शीशदीप मृगये पहुंचिपहिलेईगये पाछे श्याम रूपह्वै सिधारी नवबा लावह ४॥ अथ शांतिरसवर्णनम्॥ दामिनी दशन चारुचंदसो बदन देखि कामिनी मदनमोह मायामेंनफंदैरे। सुतके सुता के बनिताके ममताके हेत धायधाय थाके अब छांडु फरफंदैरे ॥ ध्याउ रघुनंदै करिदूरि दुखदंदै सुख सम्पति अनंदै ह्वैहै कीरति बलंदैरे। येरेमतिमंदै सब छांडु छलछंदै एक आनँदके कंदै रामचंदै क्योंनबंदैरे १ पापसोंगढ़ीहै हाड़चामसों मढ़ी है तैसेनरक कढ़ीमहा अशुद्ध भावभोंडीहै। मज्जामांस मूत्रबीठरोम औरुधिर भरी कफपित्तवातके बिकार गड़ गोड़ीहै ॥ तापैकाम मोहमदलोभसें ग्रसितसदा सबकाल काहू बिधिकुमति न छोड़ीहै। कहै हरदासहै भजनकृत शुद्धनातो निपट निकामदेह निलज निगोड़ीहै २ नातीपूत नातगोतइष्ट मित्रभाई बंधु ठौर ठौर भावनजू ठगिसे खरेरहैं। शाल औ दुशालजाल नानामणि मुक्तमाल भूषण अनूपबैस दूषण भरेरहैं ॥ कांधिचले चारिहीके बांधेरहैं हाथी घोड़ पालकी पलंगपीठ ऊंटहूपरेरहैं। कृमिबिटभस्म भये जितने बड़े औ छोटि प्राणगे अगोटि धनकोटिन धरेरहैं ३ भूषन बसन बीस रतन अनेकजाति घोड़ेपील पालकी अनूप छबिधामकी। कहा नरनाह कहाभये बादशाहकहा शाहनकेशाह जौनदेहै परिनामकी ॥ देनीकबिकहै खालफालमें बितावैदिन पालैखलखालै

कैपरखालै जसचासकी। मनहीकी मनरहिजातीं अभि
लाखें जब मूंदिगईं आंखें तबलाखें केहिकामकी ४
अथदशनायकावर्णनम् ॥ दोहा ॥ प्रोषित पतिका खंडिताकल
हंतरितानाम॥ बिप्रलुब्ध उतकंठिताबासकशय्याबाम १
स्वाअधीन पतिका कहत अभिसारिका बखानि ॥
बहुरि प्रवासित प्रेवसी आगतपतिका जानि २ कहौ
अवस्था भेदयुत दशौ नायकानाम॥ तिनके लक्षण
लक्षिसब बर्णाकहौ अभिराम ३॥ अथप्रोषितपतिका ॥
दोहा॥ बालमबसतबिदेशमें जोबियोग अकुलाय। प्रो
षितपतिका नायका ताहिकहत कबिराय १॥ कबित ॥
आलीमोहिं लागतहै वाबिन खलकखाली कबौं मुक
तालीके बिभूषण करैनहीं। कहै गिरिधारी कलपरत
न केहूनेकु पलिकापरेहूं कल पलकपरैनहीं॥ रैनदिन
घेरेघर रहत घनेरेलोग लाखनकी मौजवारे आंखन
अरैनहीं। रहत बसोई परदेशवारो प्यारो वह हियरे
हमारेते बिसारे बिसरैनहीं १ लागत बसंतके सुपाती
लिखीपीतमको प्यारीपरवीनहै हमारीसुधिआनवी।
कहैपदमाकर यहांकोयीं हवाल बिरहानलकीज्वाल
सों दवानल ते मानवी॥ ऊबकी उसासनको पूरो पर
गासा सोती निपटउसास पौनहूंते पहिचानवी। नैनन
कोढंगसोअनंग पिचकारिनते गातनको रंगपीरेपातन
तेजानवी २ बिरह तिहारेलाल बिकलभईहैबाल नींद
भूखप्यास सिगरी बिसारियतुहै। चोरीकैसीबातचंद्र
माहँते छिपाइयतु बसननतानिकै बयारिवारियतुहै॥

कहैमतिराम कलाधरकीसी कलाछिन जीवन बिही न सीनसी निहारयतुहै। बारबार सुकुमार फूलनकी मालऐसी मारकै सरोरनि सरोर मारियतुहै ३ आयो ऋतुपावस न आयोपति प्राणप्यारो मेघन बरजु आली गरजि सुनावैना। दादुरन डपटु न बकि बकि फोरैं कान चातक बरज अबपीव रटिलावैना॥ बिरहा बिथा मैं मैंतो व्याकुल परीहैंदेव जुगुनूचम कि चित चिनगी चलावैना। कोकिला न गावैं मोर सोरना मचावै घन घुमडिनधावैं जौलौं श्यामघर आवैना ४॥ अथ खंडिता॥दोहा॥ आन तियारतिचिह्नधरि आवैंपिय परभात। दुखमंडित सोखंडिता बरणातकविअव दात॥ कवित्त॥ बैठीपरयंक पैनवेली निरशंकजहां जागी ज्योतिजाहिर जवाहिरकी जागैज्यों। कहैं पदमाकर कहूं ते नंदनंदन हूं औचकही आये अलसाये प्रेम पागे यों॥ झपकीहै पलक पियाकेपीकलीक लखि झुकि झहराय हूं ननेकु अनुरागें त्यों। वैसही मयंक मुखी लगत नअं कहुती देखिकै कलंक अब येरी अंकलागें क्यों १ जावक लिलार ओठ अंजनकी लीकसो है पांयन अलीक लोक लीकना बिसारिये। कविमति राम छाती नखछत जगमगे डगमगे पगसूधे सगमें न धारिये॥ कसकै उघारतहौ पलकपलकयाते पलका में पौढ़िश्रमरतिको निवारिये। लटपटे पेंचशिरबात न कहतबनै अटपटेपेंच शिरपागके सुधारिये २ओढ़न में काजर लगाये काहू कामिनीको भामिनीके भौन

आये गजरके बाजते । कहै गिरिधारी सेदपानीसहि जानी लखि नागरि सयानी वा रिमानी ब्रजराजते ॥ भौंहन भँवाय अनखाय रिसपायबकै बैठी मनभायेतेन वाये नैनलाजते । चेरिया न करौ ये चरित्र तिरियाके लाल किरियानकरौ भलीबैरिया बिराजते ३ पीतम प्रभात अलसात आये ज्ञेयभरे प्यारी कछुरोय भरे बचन उचारोना । कहै गिरिधारी उठि आदर अदाब कियो बोली मृदुमंद मुसकाय मनुमासोना ॥ यद्यपि सुभावनसों मिली मनभावनसों नाहको गुनाह तिया तद्यपि न्यवारचोना । मानिनीके जीको मानजानिगो सुजानजब करत बिहार हार उरते उताखोना ४ ॥ अथ कलहंतरिता ॥ दोहा ॥ पहिले पियसों कलहकरि करय जो पुनि पछिताव । कलहंतरिता कहतहैं जेजानत रस भाव१ ॥ कबित ॥ जाकेकाजबोरचो कुलकानिकोजहा जअरुजाके काज लोकलाज सकल बहायोरी । जाके काजहांसी अंगरेजी बृजबासिन की जाकेकाज नांव कुलिगांवमें धरायोरी ॥ कहै गिरिधारी जाकेकाजकी न्ह्योयेते। आजुतासोंहौं रिसानीरूसरह्यो मनभायोरी। सरबस आपनो दयबरबस लीन्हेंा हायतौन लालहाथ ते गँवारिहैं। गँवायोरी १ झालरनदार झुकिझूमति बितानबिछे गहबगलीचा अरु गुलगुलीगिलमैं । जगर मगर पदमाकर सुदीपनिकी फैली जगज्योति केलि मंदिर अखिल मैं ॥ आवत तहांई मनमोहन को लाज मैन जैसीकछुकरी तैसीदिलहीकी दिलमैं । हेरि हरि

बिलमैंनलीन्हें हिलमिलमैं रहीहैं हाय मिलमैं प्रभा केभिलमिलमैं २ ससकि ससकि हियो कसकि कसकि उठैताके आप सोतननाकाढो भौनकोनेसें । एक तानलागे मुक्तानके अनेकहार कबसे दराज काजरूपे सोनसोनेसें ॥ भनत कबीन्द्र ऐसेनाहसें गुनाह बिन कियेहै बिगार धारटारे कौन टोनेसें । येरी मेरी कुमतिते कलह करायेअब सुलह करावै कौन सांवरे सलोनेसें ३ बिनतीकरोरीकै निहोरी करजोरीकर हाहाकै महान मनुहारी अनुसरी है । घूंघट उघारचो हौनने सुकानिहारचो वह रूठिउठि गयोधौं अनैसी कैसीघरीहै ॥ कहैं गिरधारी मो मनाव न रहोरी अबवाहीकै मनावन की मेरेडर अरीहै । आपते मनाय बीर लालको बुलायलाव लालकी बलायलौंटि मेरेभार परीहै ४॥अथबिप्रलुब्ध्वा ॥ दोहा ॥ ब्याकुलहोयबियोगसों सुनु पियहोयनभेट । बिप्रलुब्ध्वातासोकहत सूनीलखै सहेट कबित ॥ खेलको बहानोकै सहेलिनके संगचली आई केलि मन्दिरलैां सुंदर सजेजपर । कहैं पदमाकर तहां न पियपायोतिय त्योंहीं तनतैरही तमीपतिके तेजपर॥ बाढ़त बिथाकी कथा काहूसों कछू न कही लचकि लतालैां गई लाजहीके लेजपर । बीरीपरी बिथरि कपोलपर पीरीपरी धीरीपरी घायगिरी सीरीपरी सेज पर १ प्यारकरि जीमें प्रान प्यारेके मिलापहेत आई कुंज मंदिर प्रकाश चंद आधेके । आस पास आली लिये अपर गुलाबपास भूषन बसन साजि सुखमास-

माधेके ॥ भौनकबि कहैं सुनों देखिकै सुखायगई कहै ना हवाल कछु काम अंगदाधेके। दाहि गई देहबिथा लाजते न कहिगई रहिगई बीरी अधखात हाथ राधे के २ सकल शृँगार साजि संगलै सहेलिनिको सुंदरी मिलन चली आनँदकेकंदको। कबि मतिराम बाल करति मनोरथनि पेख्यो परजंक मैंनप्यारे नंदनंदको नेहते लगीहै देह दारुण दहनगेह बानके बिलोकि द्रुमवलिन केवृन्द को॥ चंद्रको हंसत तब आयो मुख चंद्र अब चंद्र लाग्यो हंसन तियाके मुख चंदको ३ लोग नकी चोरी बनकुंजन किशोरी गई लाग्यो हिय हेरी हूं नदीख्यो घनश्याम है ॥ कहैं गिरधारी अंग अंगन अनंग हन्यो संगकी जनीसों सतराय बोली बामहै। बदेनासहेटमोहिं बादिही बोलाय लाई बिना बन माली इहांखाली परयौ धाम है॥ खाये की अकूती किधौं तेरीमति धूती आजु दूती तैंकियोरी यती मारनको कामहै ४॥ अथ उतकंठः ॥ दोहा ॥ जोतिय पियके मिलनको अति उतकंठित होय॥ताहि कहत उतकंठिता कबि कोबिद सबकोय॥ कबित्त ॥ सौतिन के त्रासते रहैधौं औरबासते न आये कौन गासते प्यो करतो तलासतें। कहै पदमाकर सुबासते जवासते सुफूलनकी रासतें जगीहै महा सासतें॥ चांदनी बिकासते सुधाकर प्रकासते न राखतहुलासतें न लावखस खासतें। पवनकरू आसतें न जाउ उठि पासतें अरी गुलाब पासते उठाव आस पासते १ यमुनाके तीर बहे शीतल स-

मीर जहां मधुकर मधुर करत मंद शोर हैं। कवि मतिराम तहां छबिसों छबीली बैठी अंगनते फैलतिसुगंध की झकोरहै॥ पीतम बिहारी के निहारिबेको बाटऐसी चहूंवोर दीरघ दृगनि करी दौरहै। येक वोर मीन मनो येकवोर कंजपुंज येकवोर खंजन चकोर येकवोरहै २ सारी दरदावन किनारीदार साजि प्यारी मदन मनोरथके उद्योत बितबतिहै। कहै गिरिधारी निशि चन्दउजियारी चारुनिज मुख चन्दकी उजारी जितवतिहै॥ डगर निहारत बिहारीजू तिहारी ऐसे चंचलदृगन मृगमद कतवतिहै। यमुना तटीमें बैठिकै यकघटीतेंचितपरी चटपटी चहुंवोर चितवति है ३ बैठी रंग रावटी निहारीमैं पियाकोबाट आये न बिहारी भई निपट अधीरमैं। देवकीनन्दन कहै प्रयास घटाघेरिआई देखिगति प्रलयकी डरानी बलबीरमैं॥ सेज मैं सदाशिवकी सूरति बनाय पूजी तीन डेरतीनि हूंकी कीन्ही ततबीर मैं। पाखनमैं सांवरो सुलाखन अखैबट ताखनमैं लखनकी लिखी तसवीरमैं ४॥

अथ वासक शय्या ॥ दोहा ॥ मनभावन सी सेजमें ऐहैं आजु बिशेखि। सजैसेय भूषगा बसन बासक सज्या लेखि॥

कबित ॥ सोरह सिंगार कै नबेलीके सहेलिन हूंकीन्ही केलि मंदिर में कलपित केरेहैं। कहै पदमाकर सुपासही गुलाब पास खासे खसखास खसबोइनके ढेरेहैं। त्यों गुलाब नीरन सों हीरनके हौज़भरे दंपति मिलाप हित अरती उज़ेरेहैं॥ चोखी चांदनीन पर चौसर च-

मेलिन के चंदनकी चौकी चारुचांदीके चंगेरेहैं १ केस-
रि कनक जहां चम्पक बरण कहां दामिनीयो दुरि
जात देहकी दमकते। कबि मतिराम लोने लोचन ल-
पटि लाज अरुण कपोल कामतेजकी तमकते॥ पग
के धरत कल किंकिनि नेवर बाजै बिछिया झमकउ-
ठै येकही झमकते। नाह सुख चाहि चितयोंचकहंस-
ति चौंकि परै चन्द मुखी निज चौंककी चमकते २
बेसरि बिराजै राजै केसरिको अंगराग नखतसे फूले
मांग मोतीबड़े वोजके। कहैंगिरिधारी रतिमंदिर मो-
हारे लगु आसपास फैलत फुहारे छबि फोजके॥ सेज
रंग मैं जपै सलोनी साजिवैसी आजु साजे साजमंजु
लन सरस सरोजके। लाजभरे लोचन बिलोकत
पियाको मशु सनमन करत मनोरथमनोजके ३ सासुको
कोहाय नंद ताहूसों रहीरिसाय जेठोहूं सोरोंठी अति
ऐसी गतिगाहीहैं। देवरसों नेवर पुहावैकेमिसहिरूठी
दासीसों अंगूठीकी उदासी चित चाहीहैभनत कबीन्द्र
बाल बसककीरजनी मैं सजनीसुबास पास राखी मह
महीहै॥ पैली और गैलीनाहों आवनकी कैली ताहि
कोठरी अँध्यारीमैंअकेली सोइ रहीहै ४॥ अथस्वाअधीन
पतिका॥ दोहा॥ स्वअधीन पतिकाकहति पीतम जासु अ-
धीन। देखिरूप गुनशीलशुभमोहे श्यामप्रबीन॥ कबित्त॥
पीजिये सदाई रूपरावरेको आंखिनपै कीजियेकहाजु
लोकलाजकरिबोपरै। मेरेहेतरह्यो घरघेरे घनश्याममो
हिंबीलतबिलोकतहँसत डरिबोपरै॥ कहैगिरिधारीक-

हू लोगचरचैंगे तौ रचैंगे परपंच यातेह्यांते टरिबोपरै।
लाजअब जावचलिजायगो चवावह्यांतौ गोकुलमैंफूंकि
फूंकि पांव धरिबोपरै१ चाहभरयो चंचल हमारोचित
नील बधूतेरी चाल चंचल चितौनमें बसतहै। कहैपद
माकर सुचंचल चितौनहूंते औझकउझकि झझकनि
में फँसतुहै॥ औझक उझक झझकनिते सुरभि बेश
बांहीकी गहनि माहिंआय बिलसतुहै बांहीकी गहनि
ते सुनाहींकी कहनिआयो नाहींकी कहनिते सुनाहीं
निकसतुहै२ पुरबधू परबधू तिनसो न जोरिडीठि तेरी
बोरहेरे हेरियत हरबरसों। कंतवै हमारे परदेशमें बि-
तायोद्यौस बीतैंकैसे पलपल बीतत पहरसों॥ धन्यतेरो
भागभट्ट भावतोतिहारो न्यारोतेरेरंग राच्योतजैघरिको
न घरसों। सौतिजन सालेतीको सालसो तिहारे बस
लालह्वै रहोहै मालतीको मधुकरसों ३ जादिनतेनील
बधू आई गौनहाई वह तादिनते लालन कहाधौं मन
ऊटोहै। रात्योदिन बदन निहारत रहततासु तजत न
सदन बड़ोई प्रीतिजूटोहै॥ ढारतहै चौर औ सुधारत
अलक खुली खलक बिहाय लाह गोपिन की छूटी
है। मोह्यो बनमाली अलीकीजिये उपायकहा कैसी
वा बधूटी डारि दीन्ही कौनबूटी है ४॥ अथअभिसारिका॥
दोहा॥साजि सकल भूषन बसन जाय जो पीतमपास।
ताहि कहत अभिसारिका जेकबि बुद्धिबिलास॥कवित्त॥
मौलश्री मंजुलकी गुंजनकि कुंजनको मोसो घनश्याम
कहिकामको कथैगयो। कहै पदमाकर अथाइनको

तजि तजि गोपगन निजनिज गेहके पथैगयो॥ शोच सतिकीजै ठकुरानी हमजानी चितचंचलतिहारो चढ़ि चाहके रथैगयो। छीनन छपाकर छपाकर मुखीतुचलु बदन छपाकर छपाकर अथैगयो१ अंगनमें चंदनचढ़ा- य घनसार सेतसारी क्षीरफेन ऐसीआभा उफनातहै। राजत रुचिर शुचि मोतिनके आभरन कुसुम कलित केश शोभा सरसातहै॥ कबिमति रामप्राण प्यारेको मिलन चली करिकै मनोरथ न मृदुमुसक्यातहै। पोंति ना लखाई निशिचंद्रकी उज्यारी मुखचंद्रकी उज्यारी तनछाहैं। छपिजातहै२ सकल शरीर चारु चंदनबलित कियोकेशनमें कलितललित मालतीकली। कहैंगिरि- धारीहै सवांरी सेतसारी तैसी सोहत किनारी सेत सेत मुकतावली॥ निकसी छबीली क्षीर सागर तरंग ऐसी अंगअंग आजुउफनात आभाउज्वली। जामिनीजोन्हाई में सुकामिनी जोन्हाईसम मिलिकै जोन्हाईमें कन्हाई केमिलैचली ३ उमड़ि घुमड़ि घनघेरिके घमंडकीन्ह्यों निशिअंधियारी कारी सूझत न पंथको। प्यारीबन- मालीपै सिधारी बनवाही मांझसालै पंचबानपंचबान केनिखंगको॥ अहिरह्यो पांवगहिपांवरह्यो अहिगहि कौतुक बखानैकौन बियमभुवंगको। लोन्हेलोहलंगर ज्यों सांकरसमेत छूट्योजातहै मतंगमानो नृपतिअनंग को ४॥ अथप्रबत्सितप्रेयसी॥ दोहा॥ सुनैजबानी कंतकी जो अतिव्याकुलहोय। ताहिप्रबत्सित प्रेयसी कहतसुकबि सबकोय॥ कवित्त॥ लालन तुम्हारो परदेशको चलन

सुनिपलन प्रियाके जलकन भरियतुहै। कहैगिरिधारी नईप्यारी पियरायगई गहिगहि गोदबीच नारीधारि-यतुहै ॥ मोहन जू ऐसो चकचोहट बढ़ायचले मीठको दिखाय जैसेईंट मारियतुहै। कौनवहरीति कौनप्रीति सिखीप्यारे लाल कालिहलाये गौन आजुगौन करि-यतुहै १ कसुकुच कंचुकी सोंविरचु बिमलहार माल-तीकेफूल येधरेई कुम्भिलायगे। गारुगोरी चंदनसंवारु अंग आभरन दीपक उचारुतम छिति परछायगे॥बार धूप खगर अगारधूप बैंठीकहा आजु असरेश तेरेबदलि सुभायगे। आईसांझ सरस सोहाईसेज साजुयह कहत सुवाके आसुआके नैन आयगे २ सौंदिनको मारगतहां को बेगिमांगी बिदा प्यारे पदमाकर प्रभातरातिबीते पर। सोसुनि पियारी पिया आगम बराइबेको आसुन अन्हाय बोली आसन सुसीतेपर॥ बालम बिदेशोतुम जातहौ तौ ज़ावपर सांची कहिजाव कबऐहौ भवन रीतेपर। पहरके भीतरकै दुपहर भीतरकै तीसरे पहर कैधैं सांझही बितीतेपर ३ मोहनललाको सुन्योचलत बिदेशभयो बाल मोहनीको चित निपट उचाटमें। परी तलबेली तन मनमें छबीलीराखै छातिपर छिनकु छिन कुपांव बाटमें॥ पीतम नयन कुबलायनको चंदभयो घरीमें चलैगा मतिराम जेहि घाट में। नागरी नबेली रूपआगरी अकेली रीती गागरी लैठाढ़ी भई घाट ही के बाटमें ४॥ अथ आगन पतिका ॥ दोहा ॥ जातिय को परदेशते पीतम आयो होय। आगन पति का नायका

ताहि कहत सब कोय॥ कबित्त॥ आयो परदेश ते सु-हायो अति वाको चित मोदभरी मूरति बिलोकि वृज भूपकी। कहैं गिरिधारी फूल मालिकासीफूली फबि औरे छबि जालिकाभै बालिका अनूपकी॥ उक-स्यो उरोज अरु विकस्यो सरोजमुख ओज आई आंखिन मनोज महबूबकी। लाली भई तनमें खुसाली भई मनमें सोसाली भई बिरह बहाली भई रूपकी १ आजु दिन कान्ह आगमन के बधाये सुनि छाये मग फूलन स्वहाये थल थलके। कहैं पदमाकरत्यों आरती उतारिबेको थारनमें दीप हार हीरन के छलके॥ कंच-नके कलश भराये भूरिपन्नन के तानेतुंग तोरन तहांई झला झलके। पौरिके दुवारते लगायकेलि मंदिर लौ पदमिनिपांवड़े पसारे मखमलके २ नागर बिदेशमें बि-ताय बहुद्योस आये नागरिके हियमें हुलास निसिया-नकी। कबि मतिराम अंक भरत मयंक मुखी नेहै स रसाय रही मति मुखदानकी॥ सुबरन बोलके बतावत है सुबरन होरैनिजलावतहै छबिमुसक्यान की। आं-खिन ते आनँदके आंसू उमगाय प्यारी प्यारेको दे-खावत सुरति मुक्तानकी ३ लटकत आजुलट मुखपरबा-रबार आनँद उमँगि भरि हियेजिय थरकत। मरकत भूषन बसन चारुपै धनको परकत मनतनु रुचि सुचि ररकत॥ छरकत अंगअंग अंगन उछाह लोने ठरकत ऐसो रूप अंगनते अरकत। सारी सिरसरकतचूराक-रकरकत अंगिअंग दरकत आंखि बांई फरकत ४

अथस्वकीयानायकालिख्यते॥ दोहा ॥शील सुधाई सुभगता सलज सुलक्षणलक्ष। गुणअनेक सुक्रियानमें पतिसेवामेंदक्ष॥ कवित्त ॥कोरनिलौं हेरनि औहंसनि कपोलनलौंबोलनि मधुर अधरानिमें लगीरहै। उमड़े सकोच शील शोभा मढ़ैबड़े नयन लाजबड़े लोगनकी जियमेंजगीरहै॥ कहै गिरिधारी गुणगूधी साधु सूधीसोहै कुलके बिशालकी उमंग उमगीरहै। सूमहिये नेम जो बढ़ाइबेको हेमपिया प्रेमकेबढ़ाइबेकोपंथत्योंपगीरहै१शोभित स्वकीय गन गुन गनतीमें तहां तेरेनामहीकी एकरेखा रेखियतुहै। कहैपदमाकर पगीयों पतिप्रेमहीमें पदमिनितोसीतिया तूही पेखियतुहै॥सुबरण रूपजैसो तैसोशील सौरभहै याहीसों तिहारोतन धन्य लेखियतुहै। सोनेमें सुगंधना सुगंधमें सुन्योनसो सोनोऔ सुगंधतोमेंदोनोंदेखियतुहै२ दीपसम दीपति उदीपति अनूपति जरूपके स्वरूप रति रूपहिहरतिहै। कहैपरताप कोरिमजनसरसमन रंजन पियाकेदृग अंजन भरतिहै॥ ताहीसमें दूतीदिखलायो आनिभ्रमर लिखि निपटउदास ह्वैउसासन भरति है। सारसविलोचन बिचारिचितचेति राजहंसनके बंशकी सिपारसि करतिहै ३ परमप्रवीणताई प्रथमसमागममें प्यारीकी बिलोकि पियछोभ्यो तियलीनजानि। कहै कबितोयपति शोचमेंदिबेकेकाज लिखनलगीसो चित्र आपनेसरोजपानि॥कुंभीलिख्यो सिंहनिजनितलिख्यो सिंहसुत आधोकढ़ि कुम्भनिबिदारयोनिज कुलबानि। समुझि स्वभाय चित चातुरी बिलोकि प्यारो अंकभ-

रिलीन्हो निजअंक मेटिमोदमानि४॥ अथमुग्धानायका॥ दोहा॥
जोबन आगमकी उमग जाके अंगमेंहोय। मुग्धा तासों
कहतहै कबिसबग्रंथ बिलोय॥ कवित॥ अंगन में नेक
छबि जोबनकी सोहैलगी देखि मनमोहै लगी मोहन
सुजानको। कहै गिरिधारी अबहींते याकी ऐसीदुति
दिसा दसहूही में रूप जितिहै जहान को॥ गिरिवर
जीतेचले अंकुर उरोजनके भौहैं बंक जीतैचली बंकुर
कमानको। लोचनछबीलोके श्रवण परसनचलेंचलेत्यों
छबीले केश छुवन छवानको १ एंड़िन अरुनाई अंग
औपतिगोराई जंघयुगुल नितम्ब पीनताई पकरतिहै।
कटि खीनताई लरिकाई लीनताई मुखचन्द्र में
जोन्हाई ज्योति जाल बगरतिहै॥ भनत कबीन्द्र पेखि
अंकुर उरोजनके पिय हिय प्रेमके खजाने से भरतिहै।
कुवरी के तन तरुणाईकी अवाती पेखि सौतिन मन
नासिवाती से परतिहै २ बिसरन लागो बालपन को
अयानप सखिन सों सयानपकी बतियां गढ़ै लगी।
दृगलागे तिरछे चलन पगमंद लागे उरमें कछुक उस-
सनि सी चढ़ै लगी॥ अंगनमें आई तरुणाईयेोंझलकि
लरिकाई अबदेहते हरेहरे कढ़ै लगी। होनलागी कटि
अबछटिकै छलासीहैज चन्द्रकी कलासी तन दीपति
बढ़ैलगी ३ संदमंद चाललागी चलन गयंदगति चंदमु-
खी आनँद के कंद दरसातीहै। लागी कछु तनक
तिरीछे करैं ईछनको मृदु मुसक्यान लागी शोभा सरसा
ती है॥ भृकुटी कमान लागी कानबंशी तानलागी ता-

हीको वानान लागी सुद्धि सरसातीहै। साखन लजान लागी मोहै मन कान्हलागी हेरें जेहि ओर सोसुधासी बरसातीहै४॥ अथमध्या॥ दोहा॥ जाके तनमेंलाज अरु कामबरोबरिहोय। मध्या तासों कहतहैं महा सु कविसबकोय॥ कवित॥ उरज उतंगनको माननकोहार दीन्हो कंठै कंठश्री दीन्हों बाजू बंद बांहको। मंदमंद गतिसों गयंद गति जीतिलीन्हो सखिहून संग लीन्हो लीन्हो चित्त चाहको॥ लाजलाजवती कोबोलावै केलिमंदिर को नेह बरजोरीकै मिलावति है नाहको। धाराबश साव गत पूरबको चाहत है लीन्हे जात जैसे हठि केवट पछांहको १ रैन अंधियारी तैसी पावस की घटा कारी उठीअधीकारी झंझा पवनकि झमाकमें। कहैगिरिधारी मनमोहन मयंकमुखी सोवै परयंक रतिरंग की रमाकमें॥ प्यारो अंकभरै उर अंचल सकोलि करै केलिका कलोल कामतेजकी तमाकमें। रह्योतमछाय गयो दीपक बुतायतहूं कामिनी लजायरहै दामिनी दमाकमें २ झालरनदार झुकि झूमत वितान बिछेगहब गलीचा अरु गुलगुली गिलमें। जगर मगर पदमाकर सुदीपनकी फैलीजगाजोति केलिमंदिरअखिल मै॥ आवत तहांई मनमोहनको लाजमैन जैसी कछुकरी तैसी दिलहीकी दिलमें। हेरि हरि बिलमें नलान्हो हिलमिलमें रही हैहाय मिलमें प्रभाकी झिलमिलमें ३ केशरि कनक कहां चम्पक बरनकहां दामिनी योदूरि जातदेहकी दमकते। कविमतिराम लो-

ने लोचन लपटिजात अरुणा कपोल काम तेजकी तमकते ॥ पगकेधरत कल किंकिनि नेवर बजैं बिछिया झमक उठै भकहीझमकते। नाह सुखचाहिचित औचक हँसति चौंकि परै चंदमुखी निज चौकाकीचमकते ४॥ अथ प्रौढ़ा ॥दोहा ॥जो प्रवीन रतिरीति में कामकलान उदार। प्रौढ़ा तासों कहत है जाके पति अति प्यार ॥ कबित॥ रमति निशंक मनमोहन मयंकमुखी अंकमेंरही जोबसि नवलकिशोरके। कहैगिरिधारीसारी रजनी ललासों मिलि कीन्हो केलि कला कामकौतुक करोरके॥ होत आवै यामिनी को अंत उठिजैहै कंत याते करै कामिनी चरित चितचोरके। दीपक पुरावै मुक्तावली दुरावै कलीकौलकी चोरावै यों भोरावै चिह्न भोर के १ चहचही चहल चहूधा चारुचन्दनकी चन्द्रक चुनीन चौक चौकन चढ़ीहै आब। कहै पदमाकर फराकत फरस बंद फहरि फुहारनकी फरस फबी है फाब॥ मोद मदमाती मनमोहन मिलै के काज साजि मणिमन्दिर मनोज कैसी माहताब। गोल गुलगादी गुलगिलमै गुलाब गुल गजक गुलाबी गुलगिन्दुक गुले गुलाब २ रगमगी सेजपर जगमगी शोभा चारु मणिनमय मन्दिर मयूखन अथाहकी। उदयनाथ तामें प्राणप्यारी और प्राणप्यारोलाल कोककी कलानि करत सराहकी॥ किंकिणी की नीकी धुनि नूपुर ननाद सुनि सौतिन के बाढ़त बिषाद बादशाहकी। त्रिभुवन जीतिके उछाहंकी ब-

अतिमानी नौबति रसीली मनमथ बादशाहकी ३
प्रीतमप्रभात अलसात आयेदोसभरेप्यारीकछु रोसभरे
बचन उचास्योना। कहैगिरिधारी उठिआदर अदाव
कियो बोली मृदुमंद मुसकाय मनमास्योना ॥ यद्यपि
सुभावनसों मिली मनभावनसों नाहको गुनाह तियत-
द्यपि निवास्योना। माननीके जीकोमान जानिगो
सुजान जब करत बिहार हार उरते उतारयोना ४ अथ
नवोढ़ा ॥ दोहा ॥ मुग्धा जहंडरलाजसोंकर नरतिकीचाह।
ताहिन वोढ़ानामकरि बरणत सबकबिनाह ॥ कवित्त ॥
बैठी बिधुबदनी कृशोदरी दरीचीबीच खींचि पीन
अंकपरयंक परलैगयो। भनैपजनेश भुजलपटि ललाके
लगीछपटी सुनीबी कर जघन समैगयो॥ गोरीगोरो
भोरेमुखसोहै रतिभीति प्रीतिरति कसरक्त रतिअंतसो
रजैगयो। मानोपुखराजते पिरोजाभयो मानिकसोमा-
निकभयेते नीलमनिनगह्वैगयो १ दूसरीहबेलीमेंनबेली
को अकेली लखि लाड़िली ललीजो शिरमोर सखि-
यानमें। कहैगिरिधारीलाल ललकि छबीलीबालगहि
भुजमालसी लगाय करिखयानमें॥ परवशपरी प्यारी
बरबस छूटोचहै उरमें गढ़ायनख नान्ही नखियानमें।
भयेतन कंपित प्रसेदकन छायेउठे पुलक सुहाये आंशू
आये अँखियानमें २ सुनिके समागमकी कांपतमयंक-
मुखी रतिकीन चाहनेक थिरना रहतहै। दिननकी
थोरीगोरी भोरी सब बातनमें नीबी कसिबांधी डोरी
छोरी नाचहत है॥ कहै मतिरामदिन डूबेप्राण डूबि

आवै सामुहे बोलाय दौरि पांयन गहतहै। याही भ्रम माहीं पियागही आनिबाहीं हमनाहीं हमनाहीं परछाहीं सों कहतहै ३ लाईकेलिमन्दिर भोरायभोरि भामिनीको फूलगंध कैफवास कीन्हीं पौनरुखते। कंचन कलित अतिकेशरिते रमनीय लीन्हीगहि पीतमप्रसून सेज सुखते॥ भनैपजनेश भुजभरत हहाकै हिये सीबीकै सिसिटिश्याम नीबीदाबि दुखते। अहि करि उछलि सचोट पन्नगीसी औंठिउमठि अरीरीमैंमरीरीकहि मुखते ४॥ अर्थविपरीत॥ दो०॥ पतिपौढ़िकेऊपरत्रियाकरैबैठिरति रीत। आलिंगनचुंबनकरै ताहिकहतविपरीत॥ कबित्त॥ सिसकत सांसैभरै बीधेबाहु पांसैभरै सांसैभरै रसिक रसीली चित चोजकी। कहै पदमाकर सुदोऊ बिपरीत माह महमही मडीमाजा मञ्जुल मनोजकी॥ श्यामरंग भीनी भीनी सबज कंचुकी सों फोरि निकसि रहीहै अनी युगलकिशोर की। मानो रूप सागर ते उन्नत अनोखी अब आनि कढ़ी काईफोरि कलिका सरोज की १ नथकी चलनि कटि किंकिनी कलनि हिये हारकी हलनि उर उरज उतंग की। लंक की लचक परयंक की मचक इतउत की हचक रंग रचक सुसंग की॥ अंगन झलक हिये नेहकी छलक कबिरामजू ललक कोक मिथुन बिहंग की। झूमत झुमक बिपरीत की घुमक चुभी तियाकीहुमक कैधौं कुमक अनंग की २ रति बिपरीत में रमत अलबेली लखि कुंदनकी वेलि सो सरसिकै सकुचिजात। वेनी

कवि कहैंबिहसति बतरात बिज्जुछटा लों छहरि घन-
श्याम तन जरिजात॥ मोतिनकी लरैं अलकावलि के
तरेलसें उघरें जुरें यों मुखचंद देखि दुरिजात। शा-
शि मानो आगेडारि पाछे पांति तारनकी तमकी ज-
मातिमें उभरि लरि सुरिजात ३ प्यारे बिपरीत रति
करें प्यारे पीतमसों दुहुनके अंगन अनंग देखि हरषें।
भनत कबिन्द्रबेनी पीठही पै परीडोलै पन्नगी सी वाह
हेम बल्लरी सो करषें॥ नखरद खंडन चतुर नारि चु-
म्बन कै सीवीकरै पीवै त्योंन सीवी नेम परषैं। भाल
ते उचटि स्वेदकन परें कुचन पै इन्दुमनो ईशपै सुधा
के बुंद बरषें ४॥ अथ सुरतांत दोहा॥ नेहभरे आलस भरे
सकुच भरे रतिरंग। ये नैना अध अधखुले जगे पगे
पतिसंग॥ कबित्त॥ जागी रतिरंग में रसीली अरसी-
ली बैठी सेजपै अकेली आजु आदरसधरिकै। वेनी
कबि बेनीके खुलेहैं पेंच मेचक यों पेच पेच छाये मुख
मंडल बगरि कै॥ ताहीमें अरूझो शीशफूल सों अतूल
छबिऐसो सुरझायलियो प्यारी कर करिकै। बांधो
तमबंधन बिलोकि मानो दिनकर प्रात अरबिन्दन
छुड़ायो बंधु लरिकै १ प्यारी रतिरंग प्रात बैठीजीती
साफ जंगअंग सुभटनको इनाम बकसतिहै। आंगी दई
कुचन भुजनबाजू बन्द दये नूपुर पगन बेंदीभालसो लस-
ति है॥ मोहनसो कबि नैन अंजन अधर बीरी जघन
दुकूल कानफूल सरसति है। पाछेपरे जानितानि मोह-
न कटाक्षन सों बारबार बंधन सों बारन कसति है २

उठी अलसात करिरति पतिसंग बाल होत परभातच-
लीआईयुतशंकहै ॥ लागीकाम्रा मीरीछबि सोहत सुगंध
मई कुचनपै छतकूटी म्रीम्रलटैं बंकहै । आलसबलित
गात जमुहात मीड़ैदाग कंजसम हाथ मुखसोहत मयंक
है ॥ मानहुं कलानिधिको धौलकरिबे के हेत बारिज
को नातोमानि धोवत कलंक हैं ३ छूटिगये सिगरे
सिंगारहार टूटिगये तऊवोप उलहत मलगजी सारीते ।
रदछद अधर कपोलनमें दानकरि नखछतछातीमें ल-
गेहैं जेबिहारीते ॥ अलकैं बिथुरिरहीं झलकैं प्रसेद
कन अधखुली खुलीरही पलकैं खुमारीते । देह पेराई
छाई लोचन ललाई सबरातिकीजगाई आईउतरि अ-
टारीते ॥ ४ ॥ अथ ज्येष्ठा ॥ दोहा ॥ बरनत ज्येष्ठकनिकाहि
ज्यहि बिधि ब्याहीदार । करै एकपर प्यारअति दू-
जीपै घटिप्यार ॥ कवित ॥ दोऊ छबि छाजती छ-
बीली मिलि आसनपै जिनहिं बिलोकि रह्यो जात न
जितैजितैं । कहै पदमाकर पिछोहै अति आदरसे छ-
लिया छबीली कत बासर बितैबितैं ॥ मूंदे हरि एक
अलबेलीके अनोखेदृग सदृग मिचाउनेकख्यालनहितै
हितै । नेसुक नवाय दृग धन्य धन्य दूसरीको औचक
अचक मुख चुम्बत चितैचितैं ॥ १ ॥ पैाढ़ी एक सेजमें
सलोनी मृगनैनी दोऊआनि नाहपीतम सुधासमूह बर-
सै । कबि मतिराम ढिगबैठे। मनभावन दुहूनकेहिये में
अरविन्द मोद सरसै ॥ आरसी दै एक को कह्यो कि
निज मुख लखो अरविन्द बारिज बिलासवर दरसै ।

दर्पण वारी जौलौं दर्पण देखै तौलौं प्यारे प्राणप्या-
रीके उरोज हरि परसै २ बैठी हुती आंगन में अं
गना अनूपदोऊ उठीफाग खेलिबेको आवत बिहारी
को। देखिनन्द नन्दको अनन्दभई दोऊईस पेखत च
कोरीजिमि चन्दकी उजारीको॥ कहै गिरिधारीतहां
देखत दुहूंकोलाल डारि दीन्हो दृगन गुलाल एकना
रीको। जौ लौं वहकाढ़ै अँखियानते अबीर तौलौं ब
लबीर परसे उरोज प्राणप्यारीको ३ दोऊ इकठौर
जहां बैठीहै जलजमुखी प्यारो तहांआयो धोरताई ता
कि नेहकी। नेह सरसाई निरसाई न छपाईछपै ममता
ई सुलहकी कुहूक ज्योंमेहकी॥ भणत कबिन्द्र रंगभे
दही में अंगद्युति एकैरंग देखिपरी दुहुनकी देहकी।
पेरीसारी दैकैलाल एक बहराई पहिराई लालसारी
लालसारी जासों नेहकी ४॥ अथपरकीया॥दोहा॥ जोत्रिय
करैछपायकै परप्रीतमसोंप्रीति। परकीयातासोंकहत
जेजानतरसरीति॥ कवित्त॥ घातपरै कबहूं दुराय कहूं
मिलिजात ऐसे दुरे डरनेह कहांलौं निबाहिये। आंखि
नको ओट चकचोहत चढ़ोईरहै आठौयाम श्यामसुख
देखोचारु चाहिये॥ कहै गिरिधारी पानपानी मिसि
छूजैगात पवनमिसिलोचनकीलाभौंनितलाहिये। जानत
है जाननी जहान उपहासी सहि वृन्दावन वासीकी ख
वासी ह्वैकै रहिये १ गोकुलके कुलके गलीके गोपगा
वनके जौलगि कछूको कछू भारतभानै नहीं। कहै प
दमाकर परोस पिछवारन के द्वारन के दौरिगुण औ

गुण गनैनहीं ॥ तौलौंचलि चातुर सहेलियाहि कोऊ कहुं नीकेके निचोरै ताहि करतभनै नहीं। हैंतोश्याम रंगमेंचोराई चितचोराचोरी बोरततो बोच्योपैनिचोरत बनैनहीं २ चित्रलै चितेरी चुरिहेरिनि चुरियान लैके हारलिये मालिनि सुपासहू खरीरहै। ज्ञावकलै नाइन गोसाँइन बिभूति लीन्हे सांझहू सकारेहार धोबिन अरीरहै ॥ गैयनके गोड़में गोड़ैयनकी भीरबड़ी सांवरे बिहारी जू सों धीरना धरीरहै। येरी यहिगांव बीच बसिबो हमारो नाहिं पतिब्रत पारिबेकी बिपति परीरहै ३ पथिक परोसिन न पाहीपतिआपनेको औरै उपपति के सनेहसों सनीरहै। ननँद निगोड़ीनित छोड़िपतिआपनेको परै पै अकंत परकंत सों धरीरहै। सासुऔ जेठानी देवरानी की कहानी कहा चेरी औ चवाइन चवावसोंभरीरहै॥ येरीयहि गांव बीचबसिबो हमारो नाहिं पतिब्रत पारिबे की बिपति परी रहै ॥ ४ अथ ऊढ़ा ॥ दोहा ॥ ब्याही औरै पुरुष सों प्रीति और सों कीन। ऊढ़ा तासों कहतहैं सुकबि सुरस परबीन॥ श्यामल गहीलो गात पट चटकीलो पीलो छैल गरबीलो यहिद्वार ह्वै निकारिगो। टरिगो हमारो बीर धीरज हियेते आजु रूपकी झलाझलमें घूंघुट उघारिगो॥ मनचित कहैपतिब्रत की कहैको आली रूपको देवालो दृगद्वार ह्वै निकारिगो। सारीसराश्याम श्याम पूतरी नवासि गोरी हेरिबो हमारो सो हमारे गरे परिगो १ सूखी सरमोसी भ्रम ब्याकुल बैठी है कहा

नजरि लगी है तृगा तोरितोरि नाख्यो में। बेनी क-
बि भोरहीते बावरी सी घूमतहै लाज कछू काज गृह
काज अभिलाख्यो मैं॥ ललकें हमारो जीव बोलो ना
बिलोको काहे बैन आंखें मंदिरहीं तातेदीन भाख्यो
में। पलकें उघारो क्योंन कढ़िजाय आंखिन ते शोर
मतिकरें चित चोर मंदिराख्यो में २ उरझाइ दुकुल
हू मन मुरझावें लागें काढ़ें लागें कांटगहि कबहूंपगन
सों। कबहूं नेवाज खुलेकेसन कसनलागें कबहूं गिरन
लागें सुंदर अगनसों॥ ऐसेछलछंद कैकै ठाढ़ीहवै रहत
यों शकुंतला निपट भई व्याकुल लगनसों। सखिनकी
नजरि बराय बराय नारि फेरि फेरि देखति महीपति
हगनसों ३ राजैरससेरी तैसी बरषा समयरी चढ़ीचप-
ला नचैरी चकचौंधा कौंधा बारैरी। ब्रतीव्रतहारें हिय
परत फुहारें कछुछोड़ें कछुधारें जलधर जलधारैंरी॥
भणत कबिन्द्र कुंजभवन पवन सौरभ सोकौनकीकपा
यकै परावोहाथ पारैरी। कामकेतु कासेफूल डोलि
डोलिडारैंमन औरैंकरि डारैंये कदम्बन की डारैंरी४॥
अनूढ़ा नायका॥ दोहा॥ प्रीतिकरै कहुं भीतसोंजो अनब्या-
हीबाम। ताहि अनूढा कहतहैं जे कबिगुण गणग्राम
कबित्त॥ ताही ठौर लाल कछु खेलतहैख्याल जहांबाल
कोगमन आगमन दिनरातिहै। जानत न सखीसखाल-
खीलखा दुहुनकी लाजमयीनयों लगन सरसाति है॥
उदयनाथ प्यारी इतै न्यारो गात बैठी उतैंघात गहे
न्यारी कछू न्यारी अठिलातिहै। ऐंचिकरअम्बर उरो

जउकसोहै करि भौंहके लगोहै तिरछो हैं तकिजाति
है १ इतैराजिरही थोरी बैसकी किशोरी और इतै
इनहूंकी बनी उर्मिरिकिशोरकी। कहैगिरिधारीकर
तारकी सवारी चारुयुगयुगजीवैं यहजोरी बरजोर
का॥ दोऊमन कामना की गरजपूर्जिबे के काम करत
गजानन सां अरज निहोरकी। राधिका बिहारी जूसों
ब्याहकी लगन लागी लगन अगारीकीन जानीहुती
औरकी २ लालन को पिंजरा निहारि कर लालन
केबाल हाथ पटैलै सखाई भरै रितवैं। भणत कबिन्द्र
नैनखंजन सचावैं दोऊधावैं फिरि आवैं नेहजेरीभरैनि-
तवैं॥दोऊ मुसकात सोहै देखत सकात दोऊ जानत न
घातकोऊ जात कितकितवैं। सुरुखके मिसप्यौसुरुख
राखैं वहीबासुवाकी ओरचाहि बासुवाकी ओरचित
वैं३जैसीलगी हुतीबालपानसे दुहूंकी प्रीतिजैसी बनी-
हुतीजोरी एकही मिशालहै। जैसा हुतामनमें मनोरथ
दुहूंके अब तैसोकरि दीन्हो बिधि सुखद बिशाल है॥
माधवकहत राधा श्याम को बिवाह होतहैंाहीं सुनि
आईनन्दगेहयह हालहै। धोयगये सिगरे कलंक सुनि
आईली बड़ीभई हैखुशाली भाग्यशाली नन्दलालहै ४
अथ॥गुप्तादोहा॥ रतिकरि करत दुराव जो गुप्ता कहत
सुजान। बरणीतीनि प्रकारसन भूत भाव्य व्रतमान॥
कवित्त॥ शंकपायलेनको गुलाबकीबढ़ीहै डारेंबारीकी
मजारो शीशहूंते अधिकाईहै। फूललेत करतेबिछुरि
छतियांमें अटैंछूटै छतियांते फटै बसन बनाईहै॥ खंडत

अधर भौंर जपाके कुसुम जानि करठांकत होतगात जातछेद छाईहै। ननँद जेठानी ठकुरानीबनी बैठी रहै मोहिंको न देखिदेहि मोहींको पठाईहै १ पुहुपकी बाटिकामें गईती पुहुपलेन बानरकठिन एकदौरिके लपटिगो। नखन बिदारी सारी फारीमेरी मलमल कीकीन्ही मैंपुकारतब कुंजन झपटिगो॥ भगिके मरिकें मैं इहांलौंआई शिवनाथ धरकतिहै छातीरंग मुखको कपटिगो। स्वासभरिआई पियराई मुखछाई दौरिगेह तकआई पटस्वेद में चपटिगो २ आलीमैं गईहैं आजु भूलि बरसाने कहूं तापर लूपरै पदमाकर तनैनी क्यों। ब्रजबनितावै बनितानपै रचीहैं फाग तिनमें जोऊधमिनि राधामृग नैनीयों॥ घोरिडारी केसरि सुबेसरिबिलोरिडारीबोरिडारीचूनरि चुचाति रंगनैनीज्यों। मोहिंझकझोरिडारीकंचुकी मरोरिडारी तोरिडारी कसनि बिथोरिडारी बेनीत्यों ३ सासुमोहिं त्रासदैपठायोहै प्रसूनलेन कौतुक तहांको तोहिं सगरो सुनाइहैं। फाटेपटकेवरेके कंटक अटकि काटे भौंरनके ठौरठौर रहीछत छाइहैं॥ कहै गिरिधारी कितै आइकै अकेली कहा आपने शरीरनकीसांसति कराइहैं। मेरीबीर बीरकी दोहाई भूलिआई आजु आजुते नगीचे याबगीचेके न आइहैं ४ ॥ अथवचनबिदग्धा॰दोहा॥ कहतबिदग्धाभांतिद्वै जे कबिसुमतिसुजान। बचनबिदग्धा एकअरु क्रियाबिदग्धाआन॥ कबित्त॥ आजुहैं कहांते उतनाहक नहानगई हानिभई तातेतहांमहाभय भीजिये। कहैगिरिधारी

बनमांझ होतआवै सांझ साथ ना सहेली हौं अकेली
हाथमोंजिये॥ मैयामोहिं मारीभैया भवनते निकारी
पैयापरत कन्हैया मेरो कहोकाम कीजिये। भूलिकहूं
कालिन्द्री के कूलमें हेरानो आयलाल मेरे छलाकोहे-
राय नेक दीजिये १ आजुदीपमालिकाको पूजनगईहै
सबरैनि अँधियारीहौं अकेली कहा कीजिये। प्रेतओ
पिशाचनकी नारीडोलैं घरघर धरक करेजेहोत ताते
भय भीजिये॥ श्यामहिं सुनायकै कहतगोपी बारबार
दीपक बुझानी मैंनताने सरछोजिये। जौलौं घरहाई
आवै मन्दिर लौं हाहा तौलौं आवरी परोसिन बलाय
तेरी लीजिये २ आईहै निपट सांझ गैयागई बनमांझ
ह्वांते दौरिआई मेराकहो कान्ह कीजिये। मैंतोहौंअ-
केली औरदूसरोन देखियतबनकी अँध्यारीमें अधिक
भय भीजिये॥ कबि मतिराम मनमोहनसों पुनिपुनि
राधिका कहत बात सांची ये पतीजिये। कबकी हौं
हेरति न हेरेहरिपावतिहौं बछराहेरानोसो हेरायनेक
दीजिये ३ औघट कलिन्द्री के कदम्बनके वृन्द जहां
बिपुल बयारि हरिआवनेन पावती। कारेकारेपथिक
सिहावन करारे भारे शोभा सूर कीरन जहां न कढ़ि
आवती॥ कहत परोसिनसों बचन सुनाय श्यामै चातु
रीसों आपनो मिलनदरशावती। ऐसेठौरगईगैयाघरमें
न मैयादैयामैया मोहिं मारि मारिढूंढन पठावती४॥अथ
क्रियाबिदग्धा॥ दोहा॥ करै वचन सों चातुरी बचन बिदग्धा
होय।करैक्रियासों चातुरी क्रियाबिदग्धासोय॥कवित॥

मंजुल निकुंजनमें मंजुल महलमध्य मोतिनकी झालरें किनारिनमें कुरवृन्द। आयगेतहांई पदमाकर पिया-रे कान्ह आनि जुरिगये त्यों चवाइनके नीके वृन्द॥ बैठी फिरि पूतरी अनूतरी फिरंग कैसी पीठदै प्रबीनी हृगहृगनसिलै अनंद। आछेअवलोकिरहीआदरशा मंदिर में इन्दीबर सुंदर गोबिंदको मुखारवृन्द १ रात चांदनी मेंबैठी चांदनी बिछौनाकरि आसपास मंडलसहेलिनके वृन्दको। ताही समय आये तहां कुंजते सोहाये श्याम चारु चतुराईके पसारि फरफंद को। कहैगिरिधारी अति सुंदर तमाल छबि बालको दिखायो लालमंदिर अनंदको॥ सखिनभुराय यदुरायको उतरुदियो प्यारी नीलपटसों चोराय मुखचंदको २ बासरनबीतैं नैनाभरि भरि रीतैं प्यारी चढ़ै न अँटारीऔकढ़ै ना पाउँगेहते। भणत कबिन्द्र कैसेदेखै दुरिसांवरेको झांवरे बदनहोत देखेबिन देहते॥ खिरकी न दीन्हीताकी पियासुधि कीन्ही तिया अति परबीनी कीनी छलबल छेहते। कुंजी कुंज मंदिरकी पतिहि देखाय राखै कुलुफडराय यदुरायके सनेहते ३ बाईजगिआई कबिराज छाती भरीआईपीरिपरिआईऔनिकसिआई पासुरी। सूखि कैरकतगयो पाइयेरतीको कहूं जीके। परोशाररहोमां सोहैनमांसुरी॥ कौनयह पीरपावै काहूसोंनहींजनावै सणक्षण कछुकआवैस्वंधतउसासुरी। आननकी ओट किये आननसोंबातेंकरै काननकी ओरकिये कानसुनै बांसुरी ४॥ अथलक्षिता॥दोहा॥ प्रीतिकरै जो मीतसों स-

खियांलखै लखाय । ताहि कहतहै लक्षिता जेप्रवीण कबिराय ॥ कबित ॥ तेरेक्यों छपाये छपै छापेदार अं-गियामें अतर गुलाबीजो लगायो रंगबागको । रदछद ऊपर दरद शरहदयेरी रदक्रारसके कौन लग्यो रद भागको ॥ बातब निआई प्यारे भीजत बचाई प्रीति प्रकटी स्वहाई सुखपायेनेह लागको । लालकी कुसु-म्भी लालपाग दागवारी वहै सखीकहे देतहै किशोरी अनुरागको १ भूल्यो गृहकाज लोकलाजमन मोहनी को भूल्यो मनमोहनको मुरलीबजाइबो । अबही दिन द्वैमें रसखान बातफैलिजैहै सजनी कहांलैं चंद्रहाथन दुराइबो ॥ कालिहतौ कलिन्द्री तीर चितयो अचान कहीदोउनको दोऊओर मुरिमुसकाइबो । दोऊपरै पैं-यादोऊ लेतहै बलैया उन्हें भूलिगई गैया उन्हें गाग-री उठाइबो २ अबहीं अकेली कढीआवत निकुंजनते आनँदसकेलि केल किये मनभायेते । कहैगिरिधारी जानीसगरी सयानी हम अंगअंग अच्छतन खच्छत न छायेते।नेह नन्दनन्दनको मूदेहूनमूदहोत छपत छपाक र न हाथनछपायेते ॥ जुरतिनडीठिहै मुरति मुकरति कहासुरतितुरत कौन दुरति दुरायेते ३ सासौंतूदुरावति है काहेको सयानी करितुरति की सुरतिनछपतछपा येते । कंचुकी कसनिटूटीनखछतछाजतहै ओठनमेंरद औपलक पीकलायेते ॥ माधव कहत टूटेहार औअल कखुलीपलकनछाई अलसाईहैजगायेते । भरतउसासर ही नैननननवाय रही मनसकुचायरही लाजनलजायेते ४

अथकुलटा दोहा ॥ जोअनेक नायक चहै नायकसों है चैन। कुलटा तासों कहतहैं सजैरैनि दिनसैन॥ कवित्त॥ चंचल दृग अंचल चलावत चलत चाल अंचल उघारिकै हे वंचल सखीकरै। योवनके मदरूपमद मतवारीभई घूमति भ्रुकुति युवाजनसों हसीकरै॥ कहै गिरिधारी वह कौतुक कह्योन जात कंकरीके लागत सिकोरी नाकसी करै। डोलति बजारन बजारन फिरति बाल हेरनमें जारन हजारन बसी करै १ छिनुक द्वारे छिन आवत ओसारेछिनचौवारे नैनसैनन सजतहै। और गहनेन के गहँक को गनावै जाकी आठहु पहर क्षुद्रघंटिका बजत है॥ उपपति मंडली के मंडल की मंडति सुरतिके चमंडनिते नेकुनाजरतिहै। मैनमदछाकीरीति देयेकरिजाकी केती सासहू सजाकीपै कजाकी ना तर्ज्जतिहै २ योबन नबेली अलबेली रूपमानभरी हँसत गबेली गोप ग्वालन सों जायकै। एकन बुलावै एक सैनन चलावै एक नैनन रिझावैस-करहै उर लायकै॥ हेरत चलतअंग कोरन कटाक्षकरि अंचल उघारि दीन्हीलट लटकायकै। बागवनगैल गैल जातना सखीहूं संग लोकलाज डारि कुल कानि बिसरायकै ३ फेरत अनोट पीछे हेरत तिरीछे बाल गैलमें करत फैल छैलको दिखायकै॥ बात कहिबे के मिस सजनी कोठाढ़ी करै रजनी मिलाप को ठेकानो ठहरायकै॥ भनत कबींद्र मासुननँद के आगे ऐसीसूधी ह्वै रहत मानोरूधाहै उपायकै। नैननके डोरेबांधियो

बनके जोरे मनलेतहै मरोरे कुचकोरे दरशायकै ४ अथ मुदिता ॥ दो० ॥ मुदितहोयजो देखिकै सुनिचित भावति बात। मुदितातासोंकहतहैं जेकबिमतिअवदात॥ कबित ॥ तटबंशीबटके कलिंन्दीके निकट मनमोहनीखबरिपाई नन्दकेनँदनकी। सांझसमययमुनामें दीपकप्रकाशनको शासन बधूकोदियो सासुयों सदनकी ॥ कहैगिरिधारी सुनिबातइमि फूलेगात बरणिन जातयह महिमामदन की। अँगिया दरकिगईछतिया फरकिगईतियाकोसरकिसरफूंदी अंगदनकी१सासुरेकी मालिनि अशीसकै स्वहागभागपहिरायो चेंासरचँबेलीकोउनतही। रावरे महल परोस कोस द्योसबीतै वाकेमोंहिंफूलन चुनावति चुनतही॥ सुचित सकेतभों निकेतके निकटसर मानोसुख वृंदमन्द गुनमि गुनतही। माइकेकी बिरह की जरदी रदीकेमुख लाली चढ़ी बालके खुशालीके सुनतही २ वृन्दाबन बीथिन बिलोकि न गईहैजहां राजतरसालबन तालरु तमालको। कहैपदमाकर निहारतबनोईतहां नेहनको नेमप्रेम अदभुत ख्यालको॥ टूनोटूनो बाढ़त सुपूनोकी निशामें अहोआनंद अनूपरूप काह ब्रजबालको। कुंजते कहूंको सुनो कंतको गवन लखि आगमन तैसो मन हरन गोपालको ३ नाह परदेश ताके ढिगजाइबेके काज साईत शोधाय शुभ पणिडत बोलायकै। सुन्दर नक्षत्र बरयोगऔ करन तिथि चन्द्रजानि सासुहे सुमंगल सजायकै॥ माधवकहत चलीगेह ते कछुकदूरि आयमिलो कंतजो बिदेश रहो

छायकै। मनमें मुदित भई लौटिनिज धाम गई हियरे हरषिउर आनँद बढ़ायकै ४ अथअनुसयना ॥ दो० ॥ मिटो बिलोक केलिथल पियसों जहां मिलाप। अनुसयना तासों कहत होय हिये सन्ताप ॥ कवित ॥ गुंजत मधुप बैठ मालती लतान पर बेला की सुगंध बहै परस समीर की। डहडहीबेलीबन फैली फूलबरषत लहलहीलहरि वायमुनाके नीरकी ॥ सुमिरि सकेत कुंज नयनन प्रबाह बाढ़यो सखी समुझावै नेक धरत न धीर की। आईहै बसंत ऋतु कोकिल कलापी पापी बोलत पपीहा कै धैां मैन उपचीर की १ सूने घर परम परोसी के सुजान तिय आई सुनि सुनिकै परोसिन मनो अराति। कहै पदमाकर सु कंचन लतासी लचि ऊंची लेति सांस वा हियेमें त्यों नहीं समाति ॥ आय आय जहांतहां बैठि उठि जैसे तैसे दिनतो बितायो बधू बीतति है कैसे राति। ताप सरसानी देखै अति अकुलानी जऊ पति उरआनी तऊ सेजपै बिलानी जाति २ आई ऋतु पावस अकाश आठो दिशान में सोहत स्वरूप जलधारन की भीरको। मतिराम सुकबि कदम्बन की बास युत सरस बढ़ावै रस परस समीर को ॥ भौन सों निकसि वृषभानकी कुमारी देख्यो ता समै सहेटको निकुंज गिरो तीरको। नागरि के नैननमें नीरको प्रबाह बढ़यो देखत प्रबाह बढ़यो यमुना के नीर को ३ भयो पतिभ्कार पतिभ्कार में उघरि गयो हतो जौन केलि कुंज कालिंदी किनारा मैं। कहै गिरिधारी ताहि

देखत बिहाल भई बाल थहरानी मुक्ताहल ज्यों धारा में॥ छीटवारी कंचुकी कलित कुच कोरन में लोचन ते आंसू गिरे उपमा बिचारा में। ओढ़े मेघ डम्बर बघम्बर अतूप मानो शम्भु के स्वरूप है नहात छिन्नधारा में ४॥ अथ गणिका॥ गणिका तासों कहतहैं जासों धन सोंप्रीति। नृत्य गीत रतिकी कलनि कलति कोककी रीति॥ कवित्त॥ पै जार जरी की इजार पैन्है ओढ़े पटनायक हजारमें बजारमें स्वहाईहै। कहै गिरिधारी मृदुहसनबिलासनसेंआसनसें कौनबसहोतरसकाईहै॥ रीझिरीझिदैदैधन धनीनिरधनीभये तहांजरजातिजहां सम्पतिसवाईहै। क्योंनयाकेचलोआवैकंचनउलीचोपाहिकंचनकर्चारबिधि कंचनीबनाईहै १ सोहनीललित देशी गूजरी सुघरबनी सारीसुवासारी जरीपूरबी किनारीहै। सिंदुरासीगमनबहारप्रति अंगनमें सारगसीकूकति बिलोकि मेघवारीहै॥ पूरिआये नैननीर आनँदको सिंधुमानें देखि नटनागरीकी महाछबि भारी है। ईमन धरैहै हट निपट घनाश्रिरीको लेनमाल वाकोतियापियापै सिधारीहै २ लाललाल पांयनमेंकौसै जरकसी लसीहैसमाल लीबेको बहार जाके जीपैहै। घेरदार पाइचेई जार कमखाबतामें पैन्हि पीत कुरती रतीको रूप लीपैहै॥ ग्वालकबि उरजउतंगनपै आंगी तंग ओढ़नी सुरंगझुकी आंखै सरसीपैहै। सोनेकीसिरोसी बिजुरीसी निसरीसी चह चंदते चिरोसी दीसी बैठी कुरसी पैहै ३ आरससों आरत सँभारत न शीश

पट गजब गुजारत गरीबनकी धारपर। कहै पदमाकर सुगंध सरसार वैसे बिथुरी बिराजैं बार हीरनके हारपर॥ छाजत छबीले छितिछहरि छराकी छोर भोर उठिआई केलि मन्दिरके द्वारपर। एकपग भीतर सुएक देहरी पैधरे एककर कंजएककरहै किवाँरपर४ अथअन्यासम्भोगदुःखिता॥ दो०॥ आनतियातनपियाके रति केलसगालेषि। अन्यसुरतिसोंदुःखिताबरणतसुकबिनि शेषि॥ कबित्त॥ याही को पठाई बड़ाकाम करिआई बड़ीतेरीहै बड़ाईलखो लोचन लजीलेसो। सांचीक्यों न कहै कछुमोको किधौं आपहीको पाई बकसीसलाई बसन छबीलेसो॥ मतिराम सुकबि संदेशो उनमानियतुतेरे नखशिख अंग हरष कटीलेसो। तूतोहै रसीली रस बातन बनाय जानै मेरेजान आईरस राखिकै रसीलेसों १ बोलतन काहे येरी पूछेबिन बोलों कहा पूंछतहो काहेभई स्वेद अधिकाई है। कहै पदमाकर सो मारगके गये आये सांची कहमोसों आजु कहांगई आईहै॥ गईआईहो तो पास सांवरे के कौन काज तेरेलिये ल्यावनसो तेरीये दोहाई है। काहेते न लाई फिर मोहन बिहारीजूको कैसे वाहि ल्याऊं जैसे वाको मनल्याईहै २ कमल बदन कुंभिलानो काहे श्रम बिंदु ग्रीषम दुपहरीतपन सरसाईहै॥ पीतपट कैसोतेरे कंतबकसीस दीन्ही धीरेक्यों बचन मोहिं मोहनबकाईहै। बारकों लगीरी तेरे प्रेमकी कहानी कही अरुन कपोल काहे केशरि लगाई है॥ भूषरा अभंगका

हेदौरिकै संदेश लाई श्यामतनभाई आली आली दुख पाईहै ३ येरीदूती कहोमेरी ओरते तू गईहुती मेरीयों न भई भई आपनेई काजकी। कहैगिरिधारीकतकरत दुराव नहीं दुरत दुराये द्युति सुरति समाज की॥ मेरे जान केलिकरिआईहै कन्हाईजूसों लाईहैहजारनकी मौजशिरताजकी। सारी जरकसी कसी अँगिया किनारीदार बकसी बिशद बकसीस ब्रजराजकी ४॥ अथप्रेमगर्विता॥ दोहा॥ जोतियपियके प्रेमको जाहिर करै गुमान। प्रेम गर्बिता होयसो बरणतसुकबि सुजान॥ कबित्त॥ मेरेहँसे हँसतहै मेरे बोले बोलत है मोहींको जानत तनमन धन प्रानरी। कबि मतिराम भौंह टेढ़ी किहे हाँसिहूं में छोड़िदेत बसन भुषण पानी पानरी॥ मोते प्रानप्यारी केन औरकोऊ कहातोसेंरिस करि कतिकहु कहाको सयानरी। मैन कामिनी के मैनकाहूके न रूपरीझै काहू के सिखायेसखि आनो मन मानरी १ जोहूमैं कहत सोई करत प्रमान पिय वाकी डीठि मेरेसंग लागिसी फिरतिहै। मेरेहँसेहँसत उदासते उदासहोत नेकरूसिरहो पानीपानना सोहात है॥ कौन गुनरीझै मैंनजानो कछूरसभाव कैधौं मेरे भागकी बड़ाई ठहरातहै। कुशलयों बार बार घूंघुट उघारि देखै चंद्रज्यों चकोरनको मन ललचात है २ मेरेहै रहत नित मोहींको चहत चित औरयेही तनसों नहित हितवर्तिहै। कहै गिरिधारी अनरसहूमें रसहूमें कैसहून तहँ रसरीति रितवर्तिहै॥ मेरी मुसक्यानचारु

चंद्रिकाको पानकरि आनँद बिनोदके बिलास बित वतिहै। छोड़त न रैंनिदिन मेरेमुख चंद्रओर पीतम के चयन चकोर चितवतिहै ३ मेरोपति मेरे पी अधीन निशिदिन रहै मेरोओर देखिनित मन हरयतहै। मेरी प्रीति रीतिकी कहानीकहै लोगनसों मोहिंछाड़ि दूसरी न नायका चहतहै॥ माधव कहत मोसों कोककी कलानकरि मोद उपजावत रिझावत रहतहै। जैसी भागि मेरीतैसी औरकी न हेरीब्रज बनिताघनेरीभागि सालिनी कहतहै ४॥ अथरूपगर्विता॥ दोहा॥ आपुइअपने रूपकी जोतिय करैबखान। रूपगर्विता कहतहैंजाके रूप गुमान॥ कवित्त॥चंद अरबिंद बिम्ब बिद्रुम फणिन्द शुक कुंदन गयंद कुंदकली निदरति है। चम्पा सम्पा सम्पुट कदलि घनश्याम कहा कुमकुमकोअंगराग अंगन करति है॥ कोकिल कपोत पिक पल्लव कलिंदीघन दरके निरखि दारयो छतियां बरति है। मेरे इन अंगनकी नकल बनाई बिधि नकल विलोके मोहिं नकल परतिहै १ चंद्रमुख अधर निरखि हीरा दंतनको सीपहि निदरिसोन मुकता प्रकासेहै। बारन से बार चक्र अरुझक कंजखंज शुकआदि नासिकाते रहत उदासेहै॥ मेरेसब अंगनकी समता न पाई तासों कहै परसाद सबै दुखके प्रकासे हैं। कोऊ नभवासी कोऊ भयेथलवासी जायकोऊ बनवासी कोऊ जल में निवासेहैं २ बैठीहुती जाय दुरि दीपन में आयो तहां जाहितू कहो करति बीर हलधरको। भागीहों डेराय

करि भवन अंधेरेलखि निपट छवानकाम्ह आनिगहो करको॥ दीपति हमारी या हमारे साथकीन्हो छल दीन्हो जो बताय यहभेव घरघरको। दौरि दुरिबे के काज दीपक बुझायो सोतौ गाहक भयोरी येरीआप नेई गरको ३ उत्तर घनेरे कररहौ रुख फेरे तिहूं घन श्यामघेरे घरघरिहू घरीरहै। कहैगिरिधारी मूंदेरहौ मुखचंद चारु तापर चकोरनकी चारिचारि खरीरहै॥ गातनमें कबहूं सुवासना लगाईतहूं आसपास अलिन कीअवलिअरीरहै। रैनिदिन अंगनकी दीपतिदिपति नेक छिपति छिपायेते न बिपति परीरहै ४॥ अथमान वती। दोहा॥ करैईरषा दोयसों जोनायकसोमान। मान वतीतासों कहतजेकबि सुमति सुजान॥ कबित्त॥ मेखी ह्वै रहीहै सो वृषभ गतितेरी आली मिथुनके काज को बिलम्ब कहाकीजिये। करक मिटाउ आछे सिंह के चरनधाउ कन्याके सुभाउसो बिशेषितजिदीजिये॥ तुलातौअतुलरूप वृश्चिककोबिषछांडि घनघनश्याम जूके चरन गहीजिये। मकर न कीजै आछे कुम्भ के गुननह्वैकै मीनसन मगनहोकै प्रेमरस पीजियेश्तौलों होंनबोली जौलों चातक मयूर बोलै मानके मरोरनैन कोरहन खोलीमैं। खूबिरही खूबी खसबोयकी लहर दार शीतल समीर डोलै तनक न डोली मैं॥ कहत नेवाज मैनमन में उमंग आयो फूलिउठे उरजउतंगयुग चोलीमैं। कूकिउठी कोयल कसायनकहूंते श्याम देखि घनश्याम घनश्याम तोसों बोलीमैं २ येरीगोप-

ज्ञायातसोहै न गोपजाया गोपजातिक्यों छिपाया गोप ज्ञातिकीजै भंगना। हूजै गोपजाति क्यों न हूजै गोप ज्ञातिक्यों न हूजै गोपजाति गोपजाति लीन्हे संगना॥ मेटेगोप जाति तनभेटे गोपजाति उरफेटे गोपजातिधन सिंह यामें ढंगना। नोखीतू अनंगना जू चाहैदेवअंगना सो ठाढ़ोतेरे अंगनापै तेरे एकौअंगना ३ आयोहैसयान पन गयो न अयानतऊ नितउठि मान करिबेकी टेउ पकरी। घरघर माननीय मानतीमनायेतेवै तेरी ऐसी रीति सोतो काहूमें न जकरी॥ कबिमतिराम श्याम रूप घनश्यामलाल तेरेनैनकोरओर चाहै एकटकरी। हहाकै निहोरेहूंन मानती हरीननैनी काहेको करतहठ हारिलकी लकरी४॥अथपुरुषबियोग॥ कबित्त॥गाइहैं मलारै औजनाइहैं हियेमेंछकि छाइहैंछिगुनीकुंज कुंजहीके कोरेमें। कहैपदमाकर पियाइहैं पिआलामुख मुखसो मिलाय हैं सुगन्ध के झकोरेमें॥ नेह सरसाइहैंसि-खाइहैं जोसावनमें पायहैं परीसों सुखमैनके मरोरेमें। उरउरझायहैं हियेसों हियलाइहैं झुलायहैं कबैंधौं प्राणप्यारीको हिंडोरेमें १ राधेकी रहनि सुनिदहनि दहीहै देह नेहकैसे निरद नयन नीर बरसत। सांवरी सी मूरतिमें कांवरीसी परिगई तांवरीसी आय तहां श्रमबुंद बरसत॥ श्वासन ते बाड़वकी ज्वालसी जरन लागी झरपि झरपिझूमि दांवरीसी झरसत। आंखें खोलिबोलिकह्यो ऊधौजू तिहारीसोंह मेरोब्रजचलि-बेको अंगअंग तरसत २ गायबे बजायबेकी चरचा

चलावै कौन छोटेछोटे छोहरन खेलबो बिसरिगो। सबपुरबासी गहे रहत उदासी खोजहांसीको सबनके मुखनसों हेरायगो॥ सबहीके सुखकोदेवैया महिपाल सो शकुंतलाके शोचके समुद्रमें समायगो। नारि औ पुरुषमिलि सबही बिसारयोसुख सगरे नगरमेंनिगोड़ो दुख छायगो ३ कुंजघनी घनसे निकसि दामिनीसी बाम कुटिलकटाक्षनसों रीतोतनकैगई। मेरेहिय भूमि प्रेम सलिल समोयकरि इन्दीबरनैनी बीज बिरहकेवै गई॥ सुधि बुधिगई तनबिथसों बगरिगयो दुखन की मोट शिरपर मेरेदैगई। जानत नकोहै कौनकीहैकहा नाम वाको डारिकै ठगोरी मन मेरो हरिलैगई ४॥ अथ पुरुषमान॥ कबित॥ नंदलाल जादिन सों रोस करिगये मोसों तादिनसों होसकरि आवैयहिटोलैना। कहैंगिरि-धारी कबों कुंजकी गलीमेंजाय मुरली बजाय गीत गावत अमोलै ना॥ येठोई अटानसों अरेठोइ रहत आली करत सनेहकी कलानकी कलोलैना। रहैअन बोलै भेदमनको न खोलै महामान भरो डोलै हाय मोसों हँसि बोलैना १ मानकरि बैठे बनमाली बिन काज आज ऐसीकछू चूक सखीमोपैतौ परीनहीं। कोटिन उपाय करि बिनती अनेकभांति राति सबगई मेरी एकतौ सुनीनहीं॥ माधव कहत कौन करिये उपाय आली दीजिये बताय अबएक तौ चलीनहीं। पैयां परों बीरमैं बलैयालेबो तेरीचलो लाइये मनाय मनधीरतें धरैनहीं २ अबला अधीर बुधि कहाजानै

रसभाव तुमसी सुजान ऐसोमान धरियतुहै। ऐसोबोल बोलो जैसो बोलियतु बलिजाउखेदेकहूं पक्षिनकेपाछे परियतुहै॥ कीजै सनमान अरु खैयेपान प्रानप्यारे विना जलयान कैसे सिंधुतरियतुहै। जाकेलिये मोसी हाहा करिकै परतपाँय तासों हरि अनरसकी बात करियतुहै ३ खेलत हँसत पतिपतिनी सुसेजपर अति रसबस भये आपसमें बाढ़िकै। बातहीके मध्यकछु बाल अपमान कीन्हो लालरिसिवाय करवटलीन्ही डाढ़िकै॥ प्यारी परबीन तबऐसी चतुराईकरी छाती सों लगाय पीठिकसी अतिगाढ़िकै। श्रीफल सुफल बिंबि तींबरीके भायकुच पियहिय रिसकी कसक लीन्ही काढ़िकै४॥ अथदानवर्णन॥कवित्त॥ सम्पतिसुमेरुकी कुबेरकी जोपावै ताहि तुरत लुटावत बिलम्ब उरधारैना। कहै पदमाकरसो हेमहै हस्तिनके हलकाहजारनके वितरबिचारैना॥ गंज गजबकस महीपरघुनाथ रावबाहीगज धोखे कहूं याहूंदैडारैना। ताहीतेगिरिजा गजाननको गोयरही गिरितेगरेतेंनिजगोदतेउतारैना १ कछुदिन बीते अब बासर रहैगोबना चकहो बियोग के बियाद नारखतहैं। रहैगो संयोग रोज रोज यहि भांतिन सों छपीछप जैहै छिनछिन परखतहै॥ राजन के राज महाराज श्रीटिकैतराय करनसो जाकेहेम धारबरखतहैं। बारिधुरताखीदानरीतिदेखिजाकी मेरु रहैगो न बाकी चकचाकीहरखतहै २ काशीसोंनबास रामदूतसों न दास कालत्रासर्सों न त्रास न सुपंथ संतसा-

थसें। हंससों न छान हंस बंशसें न बंशआन अन्नसें न दान हालहुकुमी न हाथसें॥सिंहसें न रनी औकु-बेर सें न धनीशैल मेरुसों दुनीहै न उत्तमाङ्ग माथसों। पानीगंगपाथसों न ज्ञानी गौरिनाथसों न मानी दश-माथसों न दानी बिश्वनाथसों ३ बकसि बितुराड दीन्हे भुग्डनके भुगडनृप मुगडनकी मालय त्यों दईहै त्रिपु-रारीको। ग्रामदीन्हे धामदीन्हे उदक अरामदीन्हे घो-डश न दानजयातीके जीवधारीको॥कहैपदमाकर करो रिनके कोशदीन्हे भीतिन भरोशदीन्हे ऐसो उपकारी को। राजाजैसिंहने दईनादोयबातें एक शत्रुनको पीठि और दीठि परनारीको ४॥अथयशबर्णनम्॥कबित्त॥ कैरवसें कुन्दसों कपूरसों कलानिधिसों कागदसों कासमों क-पाससों निहारीहै। फाबिरही फटिकसों फेनुसें फो-हारासम उज्ज्वल तुषारासम तारासम तारीहै॥ हीरा हर गिरहंस हारसो चमेलीसम चांदीसम चटक चहूं-धा चारुभारीहै। मोतीसम क्षीरसम बीरराजा रामच-न्द्र फैली महिमगडलमें कीरति तिहारीहै १ घोरे सेत सेत जोरे रथसो हुगध सोहै ध्वजा फहरात ज्यों प्रवाह गंगपाथको। बिमल कलानिधिसों बैठो अवलोकिभ-यो बिसमै कहातो पातरपनको साथको॥ पूछी अज वेश तुमकोहौ कितजैहौ उन टेरिके सुनायो बड़ो बच-न सनाथको। क्षीरधिते आवत छपाकरके पासजात हौंतो मैं सुयशबीर बाबूबिश्वनाथको २ पजाकी समय में एक कौतुक लखेउँ जुआज सुनो जैसिंह सब सुखन

को हेतहै। शुचिसों सुचित्त ह्वैकै पूज्यो ब्रजराजै प्रभुटेरयो पक्षिराजै चलि जैबेको निकेतहै॥ ताहीसमय रावरेको सुयश सुनायो कहूं भयो प्रयामतन सेत बसन समेतहै। झझकि झझकि ताहि देखि देखि हालय देखो गरुड़ गोपालय आजु चढ़न न देतहै ३

इन्द्रिन ज्यों हेरत फिरत गज इन्द्र अरु इन्द्रको दनुज हेरै दिगप नदीशको। भूयश भनत सुरसरिता को हंस हेरै बिधिहेरै हंसको चकोर रजनीशको॥ साहितनै सरजायों करनी करीहैजामें होतहै अचंभो कोटि देवयो तेतीसको। पावत न हेरेतेरे यशमें हेराने निज गिरिकोगिरीशढूंढै गिरिजागिरीशको४॥अथसूमबर्णनम्

कबित्त॥ दर्दरो देखतकै दिलको दरद हरै देबेकोहज़ार लोग लाखनको टारोतो। गर्जीबदारै सरदारै दारैसौंपिदेतो दुगुन करै को सकै ब्याज़तो बिचारोतो॥ सुकबि सुबंश कहै सूमकहै सूर्सानिसों आजुबड़ो स्वप्नमें कलंक उरधारो तो। आगिसी लगीथीभागिहतीबाल बचनकी जागि ना परोतो मैं रुपैया देयडारो तो १

बांधेहारकाकरी चतुरचित्त काकरी सो उमिरिव्रथा करीन रामकी कथाकरी। पापकी पिनाकरी न जानै नाक नाकरी सोहारिल की नाकरी निरंतहीननाकरी॥ ऐसी सूमता करी न कोऊ समताकरीसो बेनीकबिताकरी प्रकाशता सुताकरी।देवअर्चा करी न ज्ञान चर्चाकरी न दीनपै दयाकरी न बापकी गयाकरी २

जाकीहै अवेलो चारिपावलो दुवन्नीआठ तामेंपुनिदे-

खे आना सोरह लखातहै। बत्तिस अधन्नी जाकीचैां-
सठ पवन्नी ताकी एकसै अठाइस जामें धेला सरसात
है॥ दकरा बिचारो हैसैछप्पन सुदेग्रायेजू पांचसै सु-
बाराजामें दमरी लखातहै। सबते कठिनहै या बापते
पियारो भैया रूपेको रुपैया दैया कापै दयोजातहै ३
पढ़नन देतहै कबित्त बाजे भावन जू बाजे चुपचाप
सुनि नींबसी अचै रहै॥ बाजे दग्राबीस गूढ़ पूछि दि
ष्ट कूटकन सूढ़ग्राठ साखिन के चरचा मचै रहै। बाजे
अफ सोसकरै बाजे रहिबोसभरै बाजेदे भरोस दरबार
में नचैरहै। बाजेमुम मूकादेत पाथर लगाय छाती बाजे
समसाहेब सुपारियों पचैरहै ४॥ अथकृपाण वर्णनम्॥ ह
रिचक्र बेली शिवशूलकी सहेली कैधैां कैधैां अलबे-
ली है नवेली महाकाल की। कैधैां बलदेवको मुशल
कीहै मौसी कैधैां माताहै प्रचण्ड कालदण्ड बिक-
रालकी॥ भृगुके कुठारते कठेठी उतनेठी कैधैां बिषकी
बहिन कैधैांकैधैां बज्रबालकी। हरदृग ज्वाल प्रलय-
कालकी करालकैधैांकैधैांकरवाल रामचंद्र महिपाल
की १ रन बनभमैती भुजलतिकापै चढ़ी कढ़ीम्यान
बामीते बिषम बिषभरीहै। जारिपुकोडसै सोतो तजै
प्राण ताहीक्षण गाडुली अनेक हारे झारे न झरी
है॥ भनत कबिंद्रराव बुद्ध अनिरुद्ध तनै युद्धबीच या
को एक तोहीं बसिकरीहै। तरल तिहारी तरवारप-
न्नगीको कहूंतंत्रहै न मंत्रहै न यन्त्रहै नजरीहै २ कैला
कालकूटकी तचाईतेजबाड़वकी शेषफूंक धर्वातप्र-

चराडताइ चढ़ीहै ॥ आईआसमानते कि पाई सानभा समान प्रलयकी बुझाई पानीपैंनधारकढ़ीहै। हरिहर हरके त्रिशूल हरिचक्रहूंते वैरीवंश बधिवेको भलीबि धिपढ़ीहै ॥ अबदुल वाहदके नबीखां तिहारीतेग बज्र के हथौरा काल कारीगर गढ़ीहै ३ दाहन ते दूनीतेग तिगुनी त्रिशूलहूते चिर्रिन ते चौगुन चलांक चक्रचा ली ते। कहैपदमाकर महीप रघुनाथ राव ऐसी शम शेरशेर शत्रुन पैघालीते ॥ पांचगुनी पवित्ते पचीसगु- नी पावकते प्रवल पचास गुनी प्रलय पर नालीते। शतगुनी सांपनसहस गुनी आपनते लाखगुनी कालते करोरि गुनी कालीते ४॥ अथमरस्या ॥ खसिगयोशा- न को निशान बैसवारे बीच आजुरथ बेधि सुरलोक की पथैगयो। कहै शिवलाल समुझावै कौन बानी कहि दूनों महरानिनको जनम वृथैगयो ॥ बाबूहरी सिंहतें सिधारे देवलोक तेहिशोक सुखभागिकै पुरा नकी कथैगयो ॥ भक्षिलयो कालद्विज भैयन को रक्ष पाल भैयन को कलबन भानुसों अथैगयो १ सुकबिच कोरन कोचंद्रमा हेरान्योकै सिरान्योभानु सुकृतसरो जनके खानको ॥ खसिपरयो साधुनकी सीमकोसदन कैधैंसागर सुखान्यो सुखशीलता सुधानको। भनतक बींद्र भूपखींची भगिवंत जूझ्यो बैरबांधिवूझै कोतली का तुरकानको ॥ खूटिगयो खरगन के ख्यालकोअ खारो कैधौं उखरयो अक्षैवट अखिल हिंदुवान को २ समुद सुखान्यो कैधौं संतजन मीनन को दीननको देव

दरखत सो उखरिगो। पुराय के प्रकाश को अकाश
शशि क्षीणभयो फैलिगो प्रकाशतेज तमपुञ्जभरिगो॥
लीन्होबिश्राम बिश्वनाथ रामधाम आजु सुकृतको
भांडाभूरिभूतलते टरिगो। हरिगो गुनीजनके गुनको
गुमानहाय आजु गुनगाहक जहानते निकरिगो ३
आजु महादीनन को सूखिगो दयाकोसिंधु आजुहीं
गरीबन को सबगथ लूटिगो । आजु द्विजराजन को
सकल अकाजभयो आजु महाराजन को धीरज जो
छूटिगो ॥ मौलकबिकहै सबयांचक अनाथ आजु आ-
जुहींअनाथनकोकरमजोफूटिगो भूपभगवंतसुरलोकको
पयानकीन्हो आजुयांचकन को कलपतरु टूटिगो ४
अथषोड़शतुकांत ॥ खाती हरघाती रसजाती मदमाती हि-
येकाती क्षीलगाती टेर बिरही बिघातीकी। जाती लै
किराती मनआती न दयाती न चुपाती तालगाती न
पिराती उतपातीकी ॥ पाती केहूं भांती तौ बिसाती
जोपैसाती औ धराती सियराती जो व्यथाती ताती
छातीकी। न्हांती छतजाती मैंनोचाती रोमपाती का-
ढ़िवाती लै जलाती जीभ क्वैलिया कुजातीकी १ सं-
गति सखानकी बखानकी न मानकी उर्मारिके उठान
की सुकौतुक निधानकी। पट्टेफहरानकी डुपट्टे जाफ
रानकी गहनि धनुबानकी कहनि किंदुपानकी ॥
लाली मुखपानकी नरेश के ललानकी प्रभामें उपमान
की अवध कुरबानकी। कुंडल के कानकी कमानभों-
ह तानकी मिठान मुसिक्यानकी अजब एक बान

कौ २ बिनशुसा मालवारे अधरन लालवारे तिलकान
भालवारे श्रोभासुख मारेहै। गिरिजात नालवारे भूरलि
बिशालवारे चलन मृणालवारे हुयअति धारेहै ॥ कारि
रंगवारे प्यारे पीलेपटवारे पखीकहै लटवारे तैंने मोहि
दोह डारेहै । वर परवारे चित्तचोर परवारे हुनुमोर
परवारे सिरमोर पक्षवारेहै ३ हारिपै हया न कीन जी
वपै भयानकीन दीनपै दया न कीन बापकी गया-
न कीन । प्रभु अरचा न कीन ज्ञान चरचा न कीन
बित्त खरचा न कीन सन फरचा न कीन ॥ बारवधू सा-
नकीन मद्यकरा पानकीन मोहमद कानकीन भंजन न
कानकीन । मीतको न मानकीन हितसब हानकीन
हरिको न ध्यानकीनमाधव बखानकीन४ ॥दोहा॥ संग्रह
सम्पूरणभई माधवकृतसुखपाय । पंचदेव कीकृपा
जगतबिदितह्वैजाय १ जोकोऊयहिग्रंथको पढ़िहैनर
मनलाय । ताहिपुत्रसम्पतिसदा देहैंश्रीरघुराय २ श्री
माधवपरसादजू बिरच्योग्रंथपुनीत । संग्रहकियअवलो
किकै बिबिधकाव्यशुचिगीत ३ भरोसर्बरस ज्ञानअरु
सकलकलागुणभूरि । सरलछंदपरबन्धअति पावनप्र
थकबिसरि ४ जाकेपढ़तहिं जातकढ़ि मनकेसकलबि-
कार । फेरिश्रोरभावैनहींपढ़िबोतासुअधार५ तामेंदई-
सहायतालिखनेमेंमनलाय । आद्योपांतसमग्रसोलिपि
शिखरतनलखाय ॥ ६ कवित्त ॥ लखणापुरीसों दोयया-
जन सुधाक्यदिशा ग्रामएक उत्तम सिमेंडीसुखदाईहै ।
तामेंमध्य बरणाचारि बसत सुजानलोग सीधो गाजबा-

नी गरनाइकी सुहाईहै ॥ विरच्यो विचारिग्रंथ संग्रह करीहै सक्ल माधवप्रसाद पद सरलमें गाईहै। लेखक सहायता दईहै शिवरतनलाल दुबे कंगाजाये मनलाये शिवपाईहै १ ॥

दो० यंत्रालयमुद्रितकियो जगमेंमहतप्रचार।
होतभयोयाग्रंथको शिवकोकृपाउदार २

इतिश्रीमाधवविलास समाप्तः ॥

मुंशीनवलकिशोरके छापेखाने मुक़ाम लखनऊ में छपा
अक्टूबर सन् १८८८ ई०

## तुलसीशब्दार्थप्रकाश ॥

गोपालदासजी रचित जिसमें सबपुराणों और षट्शास्त्रोंके मतसे सर्व प्रकारके गूढ़ाशयोंका कथन और जातक ताजकसामुद्रिककी मुख्यबातें गणित, योग शास्त्र और विवाह और यात्रादिके मुहूर्त और इसी प्रकार के असंख्य बिषयहैं जो पुस्तकके पढ़नेसे जानेजाते हैं ॥

## प्रेमरत्न ॥

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की दादी रत्नकुँवरि रचितकेवल श्रीकृष्ण और रामचन्द्रजी की भक्तिपक्षका विषय दोहा चौपाईमें है ॥

## चित्रचन्द्रिका ॥

काशीराजकवि रचित जिसमें पहले अनेक छन्दोंमें नायकाभेद वर्णन करके फिर उनको चित्रबद्धकरके रूप दिखायाहै ॥

## पीयूषलहरी ॥

पण्डित जगन्नाथजी निर्मली कृत-अति मनोहर और पुण्यदायक काव्यमें श्रीगंगाजीकी स्तुति है ॥

## गङ्गालहरी ॥

पद्माकर कविकृत जिसमें संस्कृत गंगालहरी से गंगास्तुतिके विषय में जिनसे मनुष्य भवसागर पार उतरे अपूर्व कविताहै ॥

## यमुनालहरी ॥

ग्वालकविरचित जिसमें काव्यालंकारयुक्त यमुनाजीकी स्तुति है

## जगद्विनोद ॥

पद्माकर कविकृत जिसमें नायकाभेदमें सर्व प्रकारके रसवर्णन किये गयेहैं ऐसीउत्तम सर्व लक्षणयुक्त काव्यकी पुस्तक कोई नहींहै ॥

## भारतीभूषण ॥

पण्डित गिरिधरदासरचित छन्दोंके बनाने और नायकाभेद जानने की युक्ति ॥

## रसचन्द्रोदय, व रसतरङ्ग ॥

उदय नाथ जी व शिवनाथ रचित इसमें सबप्रकारों के नायकाओं का भेद और उनके सर्व प्रकारके अलंकार रचित है छापाटैप १

# भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ।

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परमरहस्य गीताशास्त्रका सर्वविद्यानिधान सौशील्य-अनिर्योदार्य सत्यसंगर श्रीशौर्यादिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमआधिकारी जानके युद्धभूमि में मोहनाशार्थ सबप्रकार अपार संसार नि-स्तारक भगवद्भक्तिमार्ग ही ईश्वर करनेका ध्यान हैं बरु उक्त भगवद्गीतावद्ध-यत् वेदान्त योगशास्त्रान्तर्गत जिनको कि चतुर्दशशास्त्रवेत्तार अपनी बुद्धि से पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषा हो पठनपाठन करनेकी सामर्थ्य है वह कब इसके आन्तरीयअभिप्रायको जानसक्ते हैं-और यह प्रत्यक्ष होहै कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तरीयाभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धि में न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तिपरायण रसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकल कलाचातुरीण सर्वविद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी, आई, ई ने बहुतधन व्ययकर फर्रुखाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेदवेदान्तशास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलककरवा नवलभाष्यनामसे प्रभातकमलकलिका सदृश प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्र के जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं ॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओं की सम्मतिसे यह विचारहुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व ग्रन्थके भाष्य में अधिकतर रत्नसंना उससमय पर होगी कि इस शंकराचार्य कृत भाष्य भाषाके साथऔर इस ग्रन्थ के टीकाकारों की टीकाभी जितनी मिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक व श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोको सहितइस पुस्तक में, छपाहुआ है ॥